चन्दामामा
दिसंबर १९९४
RS 5

"हो गया न सब कुछ उल्टा-पुल्टा!
नया कुश्ती चैम्पियन सुपर एम
बम्बई, नवंबर 1994, हमारे विशेष संवाददाता द्वारा: "आखिर मेरी सुपर शक्ति का मज़ा उसने चख ही लिया" गरजते हुए बोला सुपर एम. सपीला सुलतान को आखिरी गिनती तक ज़मीन पर दबोचकर जब वह बना नया कुश्ती चैम्पियन, अपनी जीत की सलामी में उसने सुपर मिल्क बिस्किट का पैकेट निकाला और मज़े से मुंह में बिस्किट दबाया. फिर अपने सुपर अंदाज़ में बोला "बेचारा सुपर मिल्क की सुपर शक्ति और सुपर स्वाद से बिल्कुल अंजान था वह..." फिर अपनी विजयी मुस्कान को दबाते हुए बोला "अगली बार पूरी तैयारी करना, फिर मैदान में आना... चैलेंज के साथ!"
चैलेंज के साथ!
सुपर शक्ति, सुपर स्वाद, सुपर मिल्क बिस्किट.
NEW
PARLE
Super milk
BISCUITS
पारले

कैल्सियम कुमारी टीना के कारनामे. ''मौत के चंगुल में''

शानदार मुफ्त उपहार!!

दोस्तो, २०० ग्राम पारले प्रूडेन्ट कैल्सियम++ पैक का फ्लैप (दांतों के चित्रवाला हिस्सा) हमें अपने नाम, जन्मतिथि, स्कूल और कक्षा के विवरण के साथ इस पते पर भेजो: पारले प्रोडक्ट्स लि., निरलॉन हाउस, वरली, बंबई ४०० ०२५.

IB&W/94/223
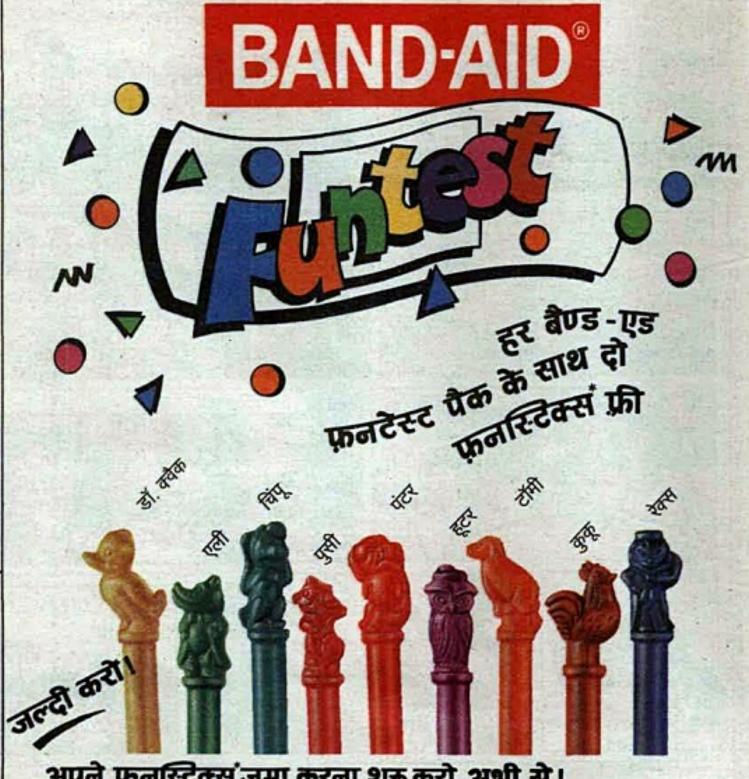
अपने फ़नस्टिक्स* जमा करना शुरू करो. अभी से!

* *खुशबूदार प्लास्टिक क्रेऑन्स*

नियम व शर्तें

1. इस प्रतियोगिता में 4 से 15 वर्ष के बच्चे भाग ले सकते हैं और यह प्रतियोगिता सिर्फ भारतीय नागरिकों के लिए ही है.
2. जॉन्सन एण्ड जॉन्सन और ओगिल्वी एण्ड मेथर से जुड़े कर्मचारी व उनके सगे संबंधी इस प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकते हैं.
3. एक प्रतियोगी जितनी चाहे उतनी एंट्रीस भेज सकता है.
4. हर एंट्री पूरी होनी चाहिए. अधूरी व अस्पष्ट एंट्रीस को गिना नहीं जाएगा.
5. एंट्रीस प्राप्त करने की अंतिम तारीख 28 फरवरी 1995 है. पर हाँ, कंपनी, अंतिम तारीख को बढ़ाने या उसे सीमित करने का पूरा अधिकार रखती है.

शामिल हो जाओ
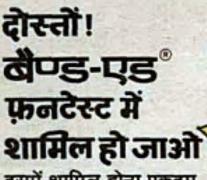
इसमें शामिल होना एकदम सरल है. एक स्ट्रिप [पट्टी] को रंगो और कुछ सरल सवालों के जवाब दो. बस ! फिर जीतो कई आकर्षक इनाम.

*साथ ही पहले पहुंचने वाली **1000** एंट्रीस के लिए भी इनाम (इसलिए अपनी एंट्रीस आज ही भेजें !)*

इस बैण्ड-एड को फ़नस्ट्रिप बनाने के लिए अपनी समझदारी लगाओ. इस पर लिखो, ड्राईंग बनाओ, या इसे रंगो. और इस तरह बनाओ इसे एक मज़ेदार फ़नस्ट्रिप
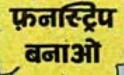
सही जवाबों पर (✓) निशान लगाओ.

1. एक बैण्ड - एड स्ट्रिप का साइज क्या होता है ?
   ☐ 19 मि मी X 72 मि मी ☐ 17 मि मी X 70 मि मी ☐ 21 मि मी X 74 मि मी
2. सिर्फ जॉन्सन एण्ड जॉन्सन की बनी बैण्ड - एड पट्टियां ही पूरी तरह से कीटाणुरहित होती हैं.
   ☐ सही ☐ गलत
3. एक बैण्ड-एड फ़नटेस्ट पैक में कितनी बैण्ड-एड पट्टियां [हर तरह की] आती हैं ?
   ☐ 20 ☐ 15 ☐ 30
4. बैण्ड-एड के पैड पर लगी असरदार दवाई क्या है ?
   ☐ बोरिक पाउडर ☐ बैन्ज़लकोनियम क्लोराइड ☐ टिंक्चर आयोडिन
5. भारत में, बैण्ड-एड पट्टियों पर वॉल्ट डिज्नी के कितने कैरेक्टर हैं ?
   ☐ 4 ☐ 6 ☐ 2

नाम : ________________

जन्म : ________________ लिंग : ________________

पता : ________________

स्कूल : ________________

6. कोई भी एंट्री वापस नहीं की जायेगी.
7. जीतने वालों को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा.
8. जजों का निर्णय अंतिम और मान्य रहेगा.
9. जॉन्सन एण्ड जॉन्सन कारण बताते/न बताते हुए इस स्कीम को बदलने, रद्द करने या वापस लेने का अधिकार रखती है.
10. सभी एंट्री फार्म साधारण डाक द्वारा इस पते पर भेजे जाने चाहिए : द बैण्ड-एड फ़नटेस्ट, द्वारा डेटा बेसिक्स, पोस्ट बॉक्स नं. 16605, बंबई-400 019.

दिसंबर १९९४

एक प्रति : ५.००

वार्षिक चन्दा : ६०.००

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

बच्चों से मज़दूरी - समाधान

दीपावली का त्योहार यथावत् उल्लास व उत्साह से मनाया गया। हाँ, देश के कुछ भागों में संक्रामक महामारी फैली और देशवासी बहुत घबराये भी। किन्तु त्योहार मनाने में किसी प्रकार की ढिलाई दिखायी नहीं गयी। पटाखे, आतिशबाजियाँ आदि विस्फोटक यथावत् जलाये गये।

किन्तु हममें से कितने ऐसे लोग होंगे, जिन्होंने उनके बारे में सोचा होगा, जो पटाखों को बनाने के काम में लगे हुए हैं। क्या वे जानते हैं कि इस काम में लगे हुए बच्चों की संख्या पचास प्रतिशत है। इन बच्चों की उम्र पंद्रह से कम है। यद्यपि यह काम जोखिम का है, फिर भी बच्चों से ही यह काम करवाया जाता है। जिन निर्माण-केंद्रों में ये पटाखे बनते हैं, वहाँ जाकर देखने पर इस चौंका देनेवाले सत्य से हम अवगत हो सकते हैं।

भारत में बच्चे केवल पटाखों को बनाने के काम में ही लगे नहीं हैं, बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी इनसे काम लिया जा रहा है। जैसे दरियों की बुनाई, चर्म से बनी सामग्री, दियासलाइयाँ, और बीड़ियाँ। अब बच्चों से कराये जानेवाले इस श्रम का जबरदस्त विरोध किया जा रहा है। सरकार को इस दिशा में ठोस क़दम उठाना आवश्यक हो गया है। यह पद्धति अवश्य ही अवांछनीय तथा अनैतिक है, जिसको रोकने का मार्ग सोचना सरकार का कर्तव्य है।

बच्चों से श्रम कराना, उन्हें मज़दूर बनाना नितांत असंगत है, सामाजिक अत्याचार है। जब परिवार की आमदनी कम होती है, परिवार के सदस्यों को जब भूख तथा दैनिक आवश्यकताओं से बचाने की नौबत आती है, तब बच्चे भी काम पर लगाये जाते हैं। छोटी ही उम्र में वे कमाई के साधन बन जाते हैं। इनकी आमदनी से परिवार को कुछ हद तक राहत मिलती है। इसलिए बच्चों या उनके माता-पिताओं को इसके लिए अपराधी ठहराना उचित भी नहीं।

बच्चों के श्रम को समाप्त करने का समाधान आसानी से हो नहीं सकता, किन्तु उनकी आर्थिक समस्याओं की ओर ध्यान देने पर और उनका समाधान ढूंढने पर अवश्य ही इस दिशा में प्रगति हो सकती है।

कौन इस दिशा में क़दम उठायेगा?

वर्ष : ४८ | दिसंबर १९९४ | अंक : ४

एक प्रति : रु. ५/- | वार्षिक चन्दा : रु ६०/-

समाचार - विशेषताएँ

हैटी में जनतंत्र

अक्तूबर १५ हैटी के लिए संतोषजनक दिवस है। उसी दिन उनके प्रिय नेता जीन बेरट्रंड अरिस टैड अध्यक्ष-पद स्वीकार करने अपने प्रवास जीवन से लौटे थे। सेना की तानाशाही से छुटकारा पाने और देश को जनतंत्र बनाने के लिए १९९१ से आँदोलन चल रहा था। सेनाध्यक्ष तानाशाह लेफ्टनेंट जनरल राबोल सेड्रास पर अमेरीका ने खूब दबाव डाला।

अमेरीका के पूर्व अध्यक्ष जिम्मी कार्टर ने तीन साल पहले ही इस परिवर्तन पर ज़ोर डाला था और इस दिशा में बहुत ही प्रयत्न भी किये।

१९९० में प्रथम बार चुनाव हुए। उस चुनाव में अरिसटैड अध्यक्ष चुने गये। किन्तु सात महीनों के अंदर ही वे अध्यक्ष-पद से हटा दिये गये।

क्रिस्टफर कोलंबस ने पाँच सौ साल पहले अमेरिका को खोज निकाला था। उसी साल (१४९२) हैटी भी प्रकाश में आया। उस द्वीप का उन्होंने नाम रखा हिस्पनोला, जिसका मतलब है छोटा स्पैन। स्थानीय रेड इंडियन उसे हैटी कहते थे। इस देश का पश्चिमी भाग अब भी इसी नाम से पुकारा जाता है। इसके पूर्वी भाग का रूपांतर हुआ 'डोमिनिकन रिपब्लिक' के रूप में।

यह द्वीप सुंदर है। स्पेन से यहाँ लोग आये और बस गये। स्थानीय रेड इंडियनों को उन्होंने अपने दबाव में रखा। सत्रहवीं शताब्दी में यह फ्रान्सीसियों के अधीन हो गया। सुसंपन्न देश के रूप में इसकी अभिवृद्धि हुई। अठारहवीं सदी के अंत में फ्रांस में बहुत बड़ी क्रांति हुई, जिसके फलस्वरूप फ्रान्स के अधीन जितने भी देश थे, उसके विरुद्ध उठ खड़े हो गये। ऐसे सब देशों में अपने को स्वतंत्र घोषित करने की जागृति उत्पन्न हो गयी। उन देशों में से हैटी भी एक था। कहा जाता है कि अपने आधिपत्य को जमाये रखने के लिए नेपोलियन ने कुछ सैनिकों को हैटी भेजा, किन्तु वे वहाँ से भाग आये। क्योंकि उस समय वहाँ विषज्वर फैला हुआ था। १८०४, जनवरी पहली तारीख़ को हैटी ने अपने को स्वतंत्र घोषित किया।

१९१५ से हैटी अमेरीका के आधिपत्य में बीस साल तक रहा। उसके बाद वहाँ अनेकों बार विद्रोह हुए। १९५७ में डा. फ्राँकोयिस डुवालियर ने अधिकार अपने हाथ में लिया। उसकी मृत्यु के बाद उसका बेटा जीन क्लाड डुबालियर सत्ता संभालता रहा। १९८६ में उसे देश से भागना पड़ा। सेनाध्यंक्ष लेफ्टनेंट जनरल नांफी ने वादा किया था कि मैं जनतंत्र को क़ायम रखूँगा और हुकूमत चलाऊँगा, लेकिन वह भी अपने वादे से मुकर गया। १९८८ में वह भी पद से निकाला गया। छह महीनों के बाद बलवाइयों की मदद से सत्ता को पुनः हस्तगत किया, लेकिन फिर से उसे हटना पड़ा। उसके बाद जन - साधारण का शासन स्थापित तो हुआ, किन्तु सेना

ही उसपर आधिपत्य चला रही थी। जीन बेरट्रेंड अरिस टैड पोर्ट-आव-शाल्पूर के एक ग़रीब परिवार में जन्मे। बचपन में ही अपने पिता की मृत्यु के कारण वे अपनी माँ के साथ राजधानी पोर्ट-आव-प्रिन्स आये। वहीं उन्होंने एक कैथलिक पाठशाला में शिक्षा पायी। इस वजह से वे ग़रीबों के दुखों और पीड़ाओं को समझ पाये। १९८० में यद्यपि वे धर्म का प्रचार करते रहते थे, फिर भी ग़रीबों के साथ ही उन्हीं की झोंपड़ियों में उन्हीं के साथ रहा करते थे। जनता में उनके प्रति आदर तथा विश्वास की भावना जगी। जनता ने हृदयपूर्वक उनका साथ दिया और डुवालियर के पारिवारिक तानाशाही के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ बुलंद की और उन्होंने यह विद्रोह खुलेआम किया। यह गुरुतर कार्य पहली बार हैटी के नेता अरिस टैड के नेतृत्व में हुआ। १९८६ में डुवालियर सत्ता से हटा दिया गया। इसके बाद भी अरिस टैड़ जनतंत्र की स्थापना के लिए कटिबद्ध होकर कार्यरत रहे। शासन के विरुद्ध हो रहे विद्रोहों के कारण चर्च उनपर क्रोधित हुआ। कैथलिक संघ से उनका बहिष्कार हुआ। उनपर आरोप लगाया गया कि जाति - भेद को वे प्रोत्साहन दे रहे हैं। जब १९९० में चुनावों की घोषणा हुई तब अरिस टैड को संदेह था कि ये चुनाव स्वच्छंदता के वातावरण में न्यायपूर्वक नहीं होंगे तब उन्होंने उनका बहिष्कार करना चाहा। लेकिन आख़िरी क्षण स्वयं उम्मीदवार बनकर चुनाव में भाग लिया और अत्यधिक संख्या में जीता भी। माना जाता था कि अध्यक्ष अरिस टैड के विचार साम्यवादी हैं। इस कारण, उन्होंने उस देश की दरिद्र जनता के लिए जो प्रणालियाँ बनायीं, जो सिद्धांत अपनाये, उनसे अमेरीकी सरकार सहमत नहीं हो पायी। जनतंत्र के कुछ विरोधियों ने सेना की सहायता प्राप्त करके उनको गद्दी से उतारने की साजिश की। १९९१ में वे अपने इस कार्य में सफल भी हुए। फिर से सेना का शासन स्थापित हुआ। अमेरीका ने इस तानाशाही शासन का विरोध किया और पुनः जनतंत्र स्थापित करने की दिशा में अपने प्रयत्न ज़ारी रखे। वह सेना को डरा-धमकाकर और समझा-बुझाकर यह काम करने लगा।
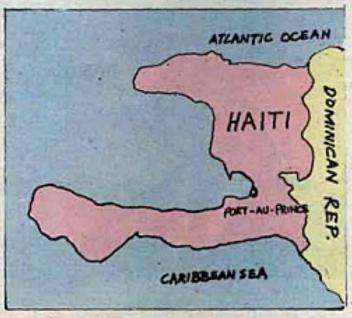
क़रीबन सितंबर १५ को अमेरीकी अध्यक्ष बिल क्लिंटन ने हैटी के सेनाध्यक्ष तथा उच्च अधिकारियों को अंतिम चेतावनी दी। उन्होंने उन्हें चेतावनी दी कि जनतंत्र की स्थापना नहीं हुई तो अमेरीका हैटी पर आक्रमण करेगा। अमेरीका में प्रवास जीवन बिताते हुए अरिस टैड ने बिल क्लिंटन की इस चेतावनी का समर्थन किया। उन्होंने संसार के नेताओं से स्पष्ट बताया कि मैं हैटी में जनतंत्र की स्थापना के लिए होनेवाले हर प्रयत्न में अपना सहयोग दूँगा।

हैटी में संपन्न चर्चाएँ विफल हुईं। सितंबर १९ को अमेरीका के सैनिक हैटी में उतरे। जनता युद्ध के भय से भयभीत होकर हज़ारों की संख्या में वहाँ से भागी। लेफ्टनेंट जनरल सिडास यह वादा लेकर गद्दी से उतरा कि उसके शासन काल में हुए अत्याचारों पर कोई कार्रवाई नहीं की जायेगी। अमेरीका ने उसकी यह शर्त स्वीकार की।

अरिस टैड जब हैटी नगर में विमान से उतरे तब २१ तोपों की सलामी के साथ उनका स्वागत हुआ। अरिस टैड ने कहा "शांति की सुरक्षा के लिए हमारा साथ देनेवाले अमेरीका के हम कृतज्ञ हैं"।

दो अहंकारी

सुमंत देश की राजकुमारी भानुमति सुँदर अवश्य थी, साथ ही थी घमंडी भी। अहंकार उसमें कूट-कूटकर भरा हुआ था। उसने अनेकों विद्याएँ सीखीं और कितनी ही कलाओं में प्रवीण हुई।

महाराज सोचा करता था कि मेरी पुत्री में अहंकार ना होता तो कितना अच्छा होता। उसे इस बात का रंज था कि इतनी विद्याओं और कलाओं में प्रवीण व निपुण होने के बाद भी यहं दुर्गुण अहंभाव उसमें घर कर गया है। उसे आशा थी कि भविष्य में यह उससे छूटेगा। किन्तु दिन-ब-दिन अहंकार उसमें बढ़ता ही गया।

पड़ोस का राजा पद्मसेन भानुमति से शादी करना चाहता था। उसने भानुमति के पिता के नाम एक ख़त लिखा, जिसमें उसने अपनी इच्छा व्यक्त की और साथ ही यह भी लिखा कि मुहूर्त की तिथि भी पक्की की जाए। राजा ने अपनी बेटी को यह बात बतायी।

"मेरी स्वीकृति के बिना पद्मसेन को ऐसा निर्णय लेने का कोई अधिकार नहीं। मुझे उसका यह व्यवहार बिल्कुल पसंद नहीं। शादी के पहले वर-वधु का एक दूसरे से मिलना ज़रूरी है, जिससे वे एक दूसरे को समझ पायें, जान पायें। कम से कम ऐसी भेंट तो अवश्य होनी चाहिये। उसने अपनी मर्यादाओं की सीमाओं का उल्लंघन किया है। ऐसे अहंकारी से हरगिज़ मैं शादी नहीं करूँगी"।

राजा जानता था कि पद्मसेन बलशाली राजा है, उसके पास असंख्य सेना है और इस विवाह के प्रस्ताव को अस्वीकार करने पर किसी भी क्षण उसके राज्य पर आक्रमण कर बैठने की संभावना है।

महाराज ने अपनी बेटी को बहुत समझाया, पर वह अपनी बात पर अड़ी रही। उसने धमकी भी दी कि ज़ोर देने पर मैं आत्महत्या कर लूँगी। उसने यह भी कहा कि अगर युद्ध छिड़ जाए तो स्वयं युद्ध-क्षेत्र में जाऊँगी और उसका

प्रताप श्रीवास्तव

समझती हो तो तुम भूल कर रही हो। वह हर प्रकार से तुम्हारे लिए योग्य वर है। उसमें तुम्हारे प्रति आदर की भावना है। अकारण तुमने इस विवाह को अस्वीकार कर दिया तो हो सकता है, यह तिरस्कार वह अपना अपमान समझे और उसमें अहंकार अंकुरित हो जाए। तुम जानती ही हो कि अहंकार से आदमी अंधा हो जाता है, अपनी विचक्षण शक्ति खो बैठता है, निर्णय लेने में संतुलन रख नहीं पाता।''

भानुमति ने तीखे स्वर में कहा ''मुझेइसका कोई भय नहीं। आज ही अपने तिरस्कार की सूचना उसे भेज दूँगी''।

इसपर प्रदीप मुस्कुराता हुआ बोला ''पुत्री, ज़ल्दबाजी मत करना। ऐसा सुयोग्य वर तुम्हें कोई और कहीं नहीं मिलेगा। मैं तुम्हें एक उपाय बताऊँगा। अपनी एक सहेली को लेकर तुम मेरे आश्रम में आना। वहीं पद्मसेन के आने का भी प्रबंध करूँगा। हो सकता है, तुम दोनों वहाँ एक-दूसरे को समझ पाओ। इस मिलाप के बाद भी अगर तुम्हें पद्मसेन अच्छा नहीं लगा तो मैं उसे सावधान कर दूँगा कि आगे से वह स्त्रीयों से अहंभाव से व्यवहार ना करें''।

पंड़ित का सुझाव भानुमति को सही लगा। विनया नामक सहेली को लेकर प्रदीप के आश्रम में आयी। दो दिन वहाँ ठहरी। प्रदीप का संदेश पाकर पद्मसेन वहाँ आया। प्रदीप ने उससे कहा कि राजकुमारी भानुमति भी इस समय मेरे ही आश्रम में ठहरी हुई है।

मुक़ाबला करूँगी।

प्रदीप नामक महापंडित एक दिन राजा से मिलने आया। वह कितने ही राजवंशों का गुरु था। राजा ने घुटने टेककर उसके पैरों का स्पर्श किया और अपनी स्थिति स्पष्ट सुनायी।

प्रदीप ने भानुमति को बुलाया और कहा ''चार दिनों के पहले मैं पद्मसेन से मिला। उसमें अहंकार नाम मात्र के लिए भी नहीं है। विनय में उसकी बराबरी का कोई नहीं। उसने तुम्हारे अपूर्व सैंदर्य तथा उच्च शिक्षा की भरपूर प्रशंसा की थी। इसी कारण वह तुमपर मुग्ध हुआ है; तुमसे विवाह करना चाहता है। अपने वंश की परिपाटी के अनुसार उसने तुम्हारे पिता को पत्र लिखा था। अगर इसे उसका अहंकार

भानुमति अपनी सहेली के साथ आश्रम के एक टीले पर बैठी हुई थी। पद्मसेन उसे देखने वहाँ आया। पंड़ित के कहे अनुसार भानुमति ने विनया का अलंकार राजकुमारी का सा किया। स्वयं उसने अति साधारण सहेली की तरह कपड़े पहन रखे।

पद्मसेन आया और विनया को देखकर राजकुमारी समझ बैठा। उसके अद्भुत सौंदर्य पर चकित होते हुए उसने कहा "तुम्हारे बारे में केवल सुना मात्र था, देखने का सौभाग्य अभी-अभी मिला है। ऐसी सुँदरी मेरी पत्नी बने तो मैं इसे अपना भाग्य ही समझूँगा। बिना लज्ञा के मुझे भी अच्छी तरह से देख लेना। मैं तुम्हें अच्छा लगा तो बात आगे बढाएँगे, नहीं तो जो पत्र मैंने तुम्हारे पिताश्री को लिखा, वापस ले लूँगा। क्योंकि अब तुम्हें देखने के बाद मुझे लग रहा है कि मैं तुम्हारे योग्य नही"।

पद्मसेन विनया से ही बात किये जा रहा था। उसने भानुमति की कोई परवाह नहीं की। यह भानुमति को बहुत खटका। वह अचानक उठ खड़ी हो गयी और चल पड़ी। पद्मसेन तब भी विनया से ही बातें करने में लगा हुआ था।

भूानुमति जब वहाँ से निकलकर चल पड़ी तो आश्रम से बाहर आते हुए प्रदीप को उसने देखा। उसने उससे पूछा "यह क्या? अकेली ही आ रही हो? पद्मसेन कहाँ है ?"

राजकुमारी ने कहा "पद्मसेन विनया को देखकर समझ बैठा कि वही मैं हूँ। मैं बग़ल में ही बैठी थी, परंतु मेरी तो उसने परवाह ही नहीं की। उसी की सुँदरता की तारीफ़ के पुल पाँधे

भानुमति की इस बात पर प्रदीप हँस पड़ा और बोला "अब पद्मसेन विनया से शादी करेगा तो क्या होगा? क्या वह राजवंश की नहीं कहलायेगी? वह सदा तुझसे भी अधिक सूँदर नहीं कहलायेगी?"

भानुमति सन्नाटे में आ गयी और बोली "बाप रे, मुझसे बड़ी ग़लती हो गयी। तक्षण ही जाकर राजकुमार से सच बतला दूँगी"।

"अगर सच बता दोगी तो पद्मसेन नाराज़ हो जायेगा। तुम्हारे कपट नाटक पर तुमपर झल्ला उठेगा। तुम कुछ समय के लिए चुप रहो बाक़ी मुझपर छोड़ो और चुपचाप मेरे साथ चलो।" प्रदीप ने कहा।

उसको लेकर वह पद्मसेन के पास गया।

उस समय पद्मसेन विनया से कह रहा था "राजकुमारी, मैं बहुत बोल चुका हूँ। परंतु तुमने तो एक भी बात नहीं की"।

प्रदीप ने तक्षण कहा "पद्मसेन, वह राजकुमारी नहीं है। राजकुमारी की सहेली विनया है। यह है राजकुमारी"।

पद्मसेन ने चौंककर भानुमति की ओर देखा। वह साधारण स्त्री के वेष में सर झुकाकर भूमि देख रही थी।

पद्मसेन नाराज़ होता हुआ बोला "यह कैसा नाटक है?"

प्रदीप ने कहा "इसमें कोई नाटक नहीं। सहेली की इच्छा थी कि वह राजकुमारी की तरह अलंकार करे। यह काम अंतःपुर में होने

जा रहा था"।

"ऐसी बात है? मैने जब तुम दोनों को देखा, तब मुझे भी ऐसा ही लगा। मुझे लगा भी कि तुम्हारी सहेली ही तुमसे अधिक सुँदर है"।

भानुमति चिढ़ती हुई बोली "वह सब कुछ अलंकार की महिमा है।

"तो इसका यह मतलब हुआ कि सुँदरता अलंकार पर आधारित है। मेरी समझ में नहीं आता कि तब क्यों कुछ स्त्रीयाँ अपनी सुँदरता पर इठलाती हैं"। प्रदीप ने कहा।

"सुँदरता को और सुँदर बनाने का अलंकार केवल राजपरिवारों में ही साध्य है। राजपरिवारों में जन्म लेने के लिए तो पूर्व जन्म का पुण्य होना चाहिये।" दर्प-भरे स्वर में भानुमति ने कहा।

पर सबको मालून हो जायेगा। महाराज को मालून होगा तो वह तुरंत निकाल दी जायेगी। इसीलिए भानुमति विनया को लेकर मेरे आश्रम में आयी थी। यहाँ उसने उसकी इच्छा की पूर्ति की। राजकुमारी के यहां होने की ख़बर मैंने तुम्हें दी। तुम यहाँ आये और उसके अलंकार को देखकर उसपर मुग्ध हो गये। तुम राजकुमारी को पहचान नहीं पाये। उल्टे इसे नाटक कह रहे हो''? प्रदीप के स्वर में डाँट थी।

''मेरी ग़लती पर पहले ही सावधान किया जाता तो मुझे इस तरह हँसी का पात्र बनना ना पड़ता।'' पद्मसेन सकुचाता हुआ बोला।

''हाँ, तुमने ठीक ही कहा। किन्तु भानुमति जानती नहीं थी कि तुम यहाँ आनेवाले हो। अकस्मात् तुम्हारे यहाँ आ जाने से वह घबड़ा गयी और आश्रम की तरफ़ चली आयी। विनया की भी समझ में नहीं आया होगा कि बोलते हुए तुमसे कैसे छुटकारा पाऊँ। राजकुमारी समस्त विद्याओं में पारंगत है, निष्णात है। राजकुमारी को ना पहचान पाने की तुम्हारी अयोग्यता तुम्हारी असमर्थता का सूचक है। सौंदर्य को देखते ही उसपर लट्टू हो जाने की तुम्हारी ज़ल्दबाजी ने ही तुम्हें हँसी का पात्र बनाया है। इसमें इनकी कोई त्रुटि नहीं''।

महापंडित प्रदीप की इन तीखी बातों से पद्मसेन आवेश में नहीं आया। वह जानता था कि ग़लती उसी से हुई है। वह धीरे से भानुमति के पास आया और बोला ''मैं तो बड़ा ही अहंकारी हूँ। किसी की मैं परवाह ही नहीं करता। किसी को अपने से बड़ा नहीं मानता।
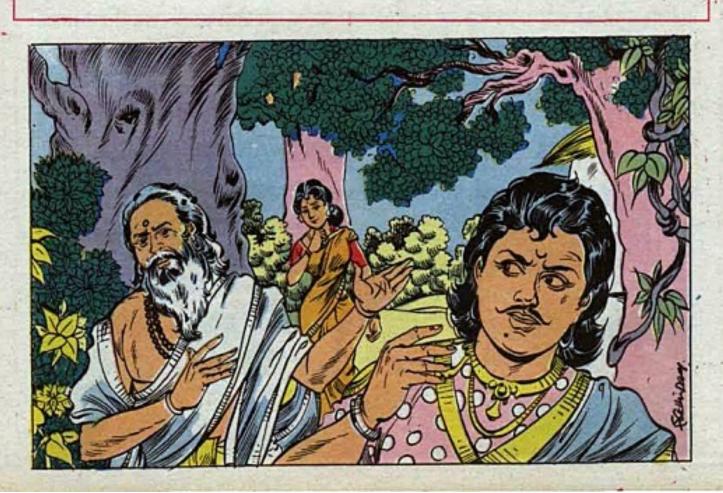
तुम्हारी इच्छा और अनिच्छा की भी परवाह किये बिना तुम्हारे पिताश्री के सम्मुख मैंने विवाह का प्रस्ताव रखा। मैं तुम्हारे योग्य नहीं। मुझे क्षमा करो। वह पत्र वापस लेता हूँ।"

"हाँ, यही ठीक होगा, क्योंकि सौंदर्य में मुझसे भी बढ़-चढ़कर है मेरी सहेली विनया।" भानुमति ने कहा।

"अपनी सहेली को तुमने राजकुमारी की तरह सजाया है। उसे अपने ही साथ बिठाया है। इससे बढ़कर विनय और निस्वार्थता व महोन्नत व्यक्तित्व का उदाहरण क्या हो सकता है ? तुम्हारे इन सद्‌गुणों के सामने अद्‌भुत सा अद्‌भुत सौंदर्य भी व्यर्थ है, मूल्यहीन है। इसलिए मैं अपने को तुम्हारे योग्य नहीं समझता"।

भानुमति कुछ बोलने ही जा रही थी तो प्रदीप ने उसे रोका और कहा "दोनों एक दूसरे के लिए अपने को अयोग्य महसूस कर रहे हो। इसी से स्पष्ट होता है कि दोनों का अहंकार मिट गया है। अब अपने-अपने राजप्रसाद लौटो और विवाह की तैयारियाँ करो। तुम दोनों के विवाह पर मैं भी आऊँगा और आशीर्वाद दूँगा।"

पद्मसेन प्रदीप को प्रणाम करके चला गया। असंतृप्त भानुमति गुरु से बोली "वह विनयाके सौंदर्य पर मुग्ध हुआ है। उसकी सुँदरता सच्चाई है। मेरे विनय को उसने उसकी सुँदरता से भी अधिक प्रधानता दी है। पर यह सच नहीं है। आपने मुझपर यह थोपा है। इसलिए शादी उसे विनया से ही करनी है, मुझसे नहीं"।

प्रदीप ने उसके सर पर हाथ-रखकर प्यार से कहा "पुत्री, तुम्हारे विनय गुण से पद्मसेन बहुत प्रसन्न है। वह इसीलिए तुमसे प्यार भी कर रहा है। तब क्या यह अच्छा नहीं होगा कि तुम सचमुच ही उस गुण को अपनाओ और गुणी बनो। क्या तुमसे यह संभव नहीं ? अपनी सहेली विनया के बारे में चिंतित मत होना। नगर की सुरक्षा के अधिकारी पद्मनाग के बेटे से उसकी शादी पक्की समझो। तुम दोनों के अहंकार को दूर करके, तुम दोनों को आदर्श दंपति बनाने के लिए ही मैंने यहाँ बुलवाया था। अब समझ गयी हो ना?" भानुमति ने झुककर गुरु के पैरों को प्रणाम किया। विवाह के बाद सब राजपरिवारों में वह विनय का एक मात्र आदर्श मानी जाने लगी।

(ट्रोय नगर के राजा वर्धन को मोहन नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। राजा को जब मालूम हुआ कि नवजात शिशु से नगर का ध्वंस होगा, तो उसने चरवाहे को उसे सौंपा और उसे मार डालने की आज्ञा दी। चरवाहा उस शिशु को मार नहीं सका। उसने उसे पाल - पोसकर बड़ा किया। एक दिन तीन अप्सराएँ मोहन के पास आयीं। उन्होंने मोहन से आग्रह किया कि वह अपना निर्णय सुनाये कि हम तीनों में से कौन अत्यंत सुँदर हैं। कामिनी अप्सरा ने उससे वादा किया कि भुवनसुँदरी को तुम्हारी बनाऊँगी, तो उसने उसीको अत्यंत सुंदरी घोषित किया। -बाद)

जब से राजा वर्धन ने अपने पुत्र को मार ड़ालने के लिए चरवाहे के हाथों सौंपा, तब से वह अपने पुत्र की स्मृति में हर वर्ष नगर में उत्सव मनाता आ रहा था। वह यह जानता नहीं था कि उसका पुत्र अब भी जीवित है।

मोहन को कामिनी ने फल दिया। उन्हीं दिनों में उत्सव भी मनाया जानेवाला था। वर्धन के सिपाही इडा पर्वत पर आये। उन्होंने चरवाहे को राजा की आज्ञा सुनायी कि उत्सवों में होनेवाली स्पर्धाओं में भाग लेने के लिए अच्छे से अच्छे बैल भेजे जाएँ।

मोहन ने कभी भी इन उत्सवों को देखा ही नहीं था। वह उन स्पर्धाओं को देखने के लिए बहुत ही आतुर था। उसने हठ किया कि मैं भी ट्रोय नगर साथ आऊँगा। चरवाहा मन ही मन ड़रने लगा कि कहीं पोल खुल ना जाए। राजा

को मालूम हो जाए कि उसने शिशु की हत्या नहीं की, बल्कि पाल-पोसकर बड़ा किया तो मालूम नहीं, राजा उसे क्या दंड देंगे। उसने मोहन को बहुत समझाया पर अपने हठ पर वह अड़ा रहा, टस से मस ना हुआ। उसे अकेले भेजना भी वह चाहता नहीं था, इसलिए वह भी उसके साथ -साथ निकल पड़ा।

ट्रॉय नगर में संपन्न होनेवाले वार्षिक उत्सवों में अनेकों प्रकार की स्पर्धाएँ होतीं थीं। उनमें से मल्लयुद्ध भी एक था। वर्धन के सिंहासन के सम्मुख ही कितने ही मल्लवीर मल्लयुद्ध करते थे। उसमें कोई भी वीर भाग ले सकता था। जो मल्लवीर सबको हराता था, उसे मुकुट पहनाया जाता था।

चरवाहे ने बहुत मना किया किन्तु मोहन ने उसकी एक ना सुनी। उसने भी मल्लयुद्ध में भाग लिया। सबको चित् कर दिया। उसे मुकुट पहनाया गया। दौड़ की स्पर्धा में भी भाग लेकर वह अव्वल रहा। इसके लिए भी उसे मुकुट पहनाया गया। मोहन ने जब दो मुकुट पाये तो वर्धन के पुत्र उससे ईर्ष्या करने लगे। ऐरे-गैरे मोहन को नीचा दिखाने के लिए उन्होंने उसे कुश्ती के लिए आह्वान दिया। उस कुश्ती में भी मोहन ने सबको पराजित किया और तीसरा मुकुट पाया।

मोहन की इस वीरता से वर्धन के पुत्र क्रोधित हो गये। उन्होंने उसे मार डालने का निश्चय किया। उन्होंने अपने सैनिकों को सावधान कर दिया कि मोहन क्रीडारंग से भाग ना पाये। राजा के दो बलशाली पुत्र वीरसिंग और अरिभयंकर तलवारें लेकर उसपर टूट पड़े। विचित्र बात तो
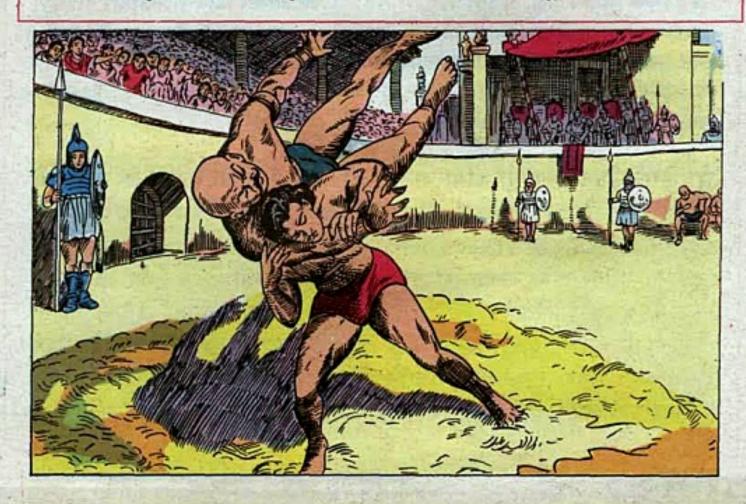
यह है कि मोहन और अरिभयंकर दोनों एक ही पिता और माता के पुत्र हैं। परंतु दोनों इस सत्य से अवगत नहीं थे।

चरवाहे ने देखा कि बात हदों को पार कर जा रही है, तो वह दौड़ा-दौड़ा वर्धन के पास गया। उसने राजा से कहा "महाराज, मोहन की रक्षा कीजिये। वह भी आप ही का पुत्र है"।

राजा को इस बात पर शोक नहीं हुआ कि उसका पुत्र मरा नहीं है, जीवित है। अपनी आज्ञा को धिक्कारनेवाले चरवाहे पर भी वह क्रोधित नहीं हुआ। उसे अपने पुत्र की शूरता तथा योग्यता पर बहुत ही प्रसन्नता हुई। उसके आनंद की सीमा नहीं रही। उसने तुरंत हुक़्म दिया कि पुत्र को पाने की खुशी में उत्सव मनाये जाएँ, भोज दिये जाएँ। देवी - देवताओं को बलियाँ चढ़ायीं जाएँ। मोहन को पाकर उसे लगा कि उसे सब कुछ मिल गया है।

पुजारियों ने वर्धन को सावधान किया। उन्होंने स्पष्ट कह दिया "महाराज, तक्षण ही मोहन का वध कीजिये। अगर ऐसा किया नहीं गया तो ट्रोय नगर ध्वंस हो जायेगा, दग्ध हो जायेगा।"

"इतने सुयोग्य पुत्र को खोने के बदले, अच्छा यही है कि ट्रोयनगर जल जाए, मिट जाए।" वर्धन ने गर्व से कहा।

अब मोहन वर्धन के पुत्रों में से एक है। उसके भाइयों का विवाह पहले ही हो चुका था। वे अब ग्राहस्थ्य जीवन बिता रहे हैं।

उन्होंने भाई मोहन से पूछा "तुम भी शादी क्यों नहीं कर लेते?"

मोहन हर दिन कामिनी देवी की पूजा किया करता था। उसे विश्वास था कि कामिनी का वर किसी दिन अवश्य ही सफल होगा। इसलिए उसने भाइयों से कहा "यह देवी मेरे योग्य पत्नी मुझे देगी। मुझे पत्नी की खोज करने की आवश्यकता नहीं"।

उसे मालूम था कि जिस भुवनसुंदरी को वह चाहता है, वह स्पार्टा नगर में है। वह किसी ऐसे मौक़े की ताक़ में था, जिसके बहाने वह स्पार्टा नगर जा पाये। निकट भविष्य में ही उसके हाथ ऐसा अवसर आया।

सुलोचना नामक वर्धन की एक बहन है। कुछ समय पहले ग्रीकवालों ने उसका अपहरण किया। इस घटना के बाद वर्धन ने सभा बुलायी और उनकी राय पूछी कि ग्रीक से युद्ध किया जाए अथवा शांतिपूर्वक चर्चाएँ की जाएँ। सभा में निर्णय हुआ कि युद्ध छेड़ा ना जाए बल्कि शांति का मार्ग ही अपनाया जाए। ट्रोय से ग्रीक दूत भेजे गये। दूतों ने सुलोचना को सौंपने की प्रार्थना की। किन्तु ग्रीकवासियों ने मना कर दिया। प्रयत्न विफल हुआ।

फलस्वरूप पुनः सभा बुलायी गयी। सर्वसम्मति से निर्णय हुआ कि ग्रीक से युद्ध किया जाए और तक्षण ही उसपर हमला करने के साधन जुटाये जाएँ।

"हमले का नेतृत्व मैं करूँगा। मुझे आवश्यक नौकाएँ और सैन्य - शक्ति दिलवाइये। मैं सुलोचना को लाकर ही रहूँगा। अगर परिस्थितिवश सुलोचना को मैं ला नहीं पाया तो सुलोचना के समान स्तर की ग्रीक की किसी राजकुमारी का अपहरण करके ले आऊँगा और आपके सम्मुख उपस्थित करूँगा।" मोहन ने सभा में शपथ खायी। वर्धन तथा सभासदों को संपूर्ण विश्वास था कि मोहन यह कार्य कर पायेगा। क्योंकि वे उसकी युद्ध - कला, पराक्रम और बल देख चुके थे। उसका कहना कि सुलोचना ना सही सुलोचना के स्तर की किसी राजकुमारी का अपहरण करके लाऊँगा, उन्हें बहुत ही अच्छा लगा। उसके शब्द - शब्द में प्रतिशोध की भावना गूँज रही थी।

जिस दिन यह सभा हुई, उसी दिन भुवनसुंदरी का पति प्रताप स्पार्टा से ट्रोय आया।

अकस्मात स्पार्टा नगर में महामारी फैली। ट्रोय नगर से कुछ लोगों को ले जाकर उन्हें बलि चढ़ाने और देवी को शांत करने के प्रयत्न में वह यहाँ आया हुआ था।

मोहन ने प्रताप का स्वागत किया, उसके रहने के लिए आवश्यक प्रबंध करवाये। उससे अच्छी दोस्ती की। उसने प्रताप से कहा "स्पार्टा आने की मेरी बड़ी इच्छा है। वहाँ के देवताओं की पूजा करके पुण्य कमाना चाहता हूँ। अच्छा हुआ, तुम मिल गये"। मोहन की बातों से प्रताप बहुत खुश हुआ।

मोहन की मांग के मुताबिक नौकाएँ सन्नद्ध की गयीं। मोहन के साथ प्रताप भी उसी की नौका में सफ़र कर रहा था। स्पार्टा नगर पहुँचने में बहुत दिन लगे। भुवनसुँदरी के लिए मोहन क़ीमती तोहफ़े अपने साथ ले आया था। वे सब तोहफ़े उसने उसे दिये, और उन्हीं के घर में अतिथि बनकर रहने लगा।

भुवनसुँदरी को देखते ही मोहन जान गया कि विश्व भर में ऐसी सुँदरी होगी ही नहीं। वह सदा इसी सोच में रहता कि कामिनी देवी की कृपा से वह अवसर कब आयेगा, जब कि भुवनसुँदरी को अपने साथ ट्रोय नगर ले जा पाऊँगा।

कामिनी देवी के अप्रत्यक्ष प्रोत्साहन से भुवनसुँदरी भी मोहन पर लट्टू हो गयी। जब से उसने उसे देखा, तब से वह उसे चाहने लगी, उसपर मरने लगी। लेकिन इस रहस्य को अपने पति से बचाने में वह बहुत ही सजग रही।

मोहन स्पार्टा नगर में प्रताप का अतिथि बनकर नौ दिन रहा। तब एक दिन प्रताप को क्रीट द्वीप जाना पड़ा। क्योंकि उसके दादा का देहाँत हो गया था। उसका वहाँ जाना अति आवश्यक था।

मोहन ने सोचा कि यह सब कुछ कामिनी देवी के आशीर्वाद का फल है। यह अवसर पाकर भुवनसुँदरी को अपने साथ ले जाने की उसने योजना बनायी और वह भी बिना किसी झिझक के मान गयी।

उसी रात को दोनों गुप्त रूप से मोहन की नौका में पहुँचे। सब नौकाएँ ट्रोय की ओर चल पड़ीं। मोहन अनेकों द्वीपों में रुकता हुआ, आनंद लूटता हुआ लंबी अवधि के बाद ट्रोय नगर

CHITRA
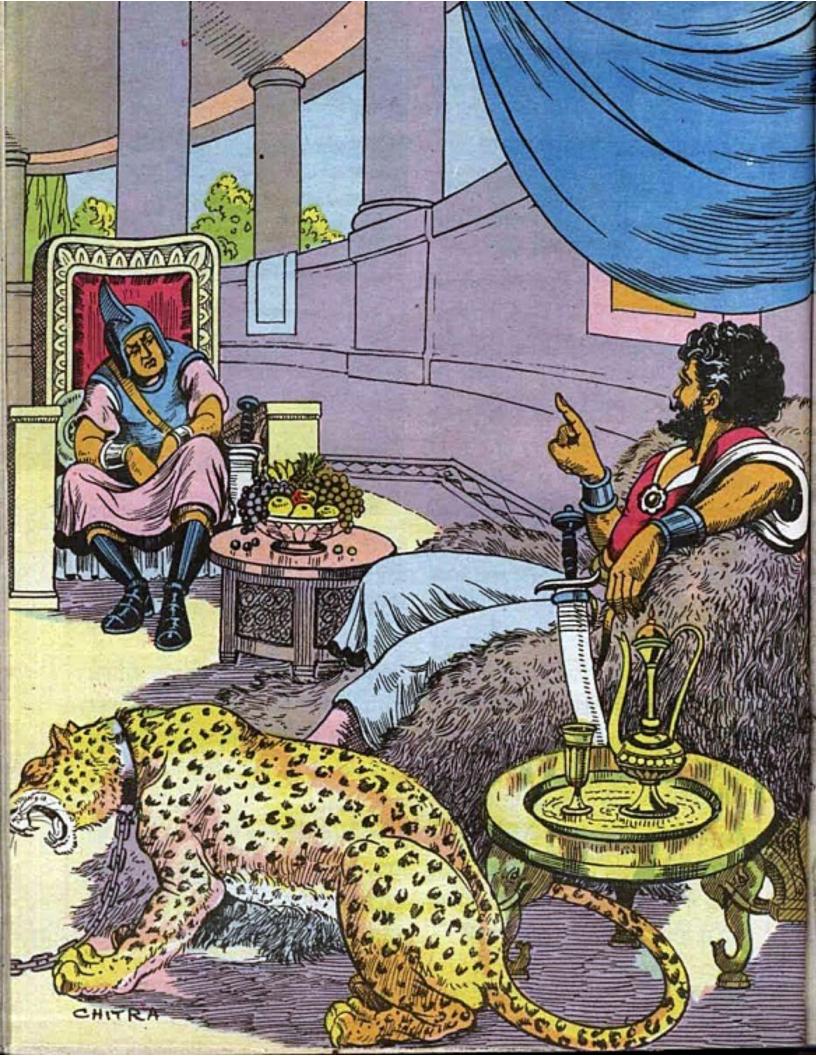
पहुँचा।

प्रताप दादा के क्रिया - कर्म के बाद लौटा। वह जान गया कि अतिथि बनकर आये मोहन ने उसके साथ कैसा छल-कपट किया। वह तुरंत अपने बड़े भाई के पास गया और सारी बातें बतायीं। उसने कहा "ट्रोय नगर पर हमले का हुक़्म तुरंत ज़ारी कीजिये"।

बड़े भाई ने उसे समझाते हुए कहा "ज़ल्दबाजी मत करो। मैं दूतों को ट्रोय नगर भेजूँगा। तुम्हारी पत्नी को वापस ले आऊँगा। तुम्हारे साथ जो अन्याय हुआ है, उसका परिहार भी वसूल करूँगा। अगर उन्होंने मेरी बात नहीं मानी, तुम्हारी पत्नी को वापस नहीं भेजा, तो युद्ध अवश्य होगा।"

राजा के भेजे दूत ट्रोय नगर पहुँचे। तब तक मोहन भुवनसुँदरी के साथ लौटा नहीं था। इसलिए दूतों के दोषारोपणों का विश्वास वर्धन ने किया ही नहीं।

उसने दूतों से कहा "आप जो भी कहते हैं, निराधार है। मैं इनके बारे में बिलकुल ही अनभिज्ञ हूँ। अगर तुम्हारी राजकुमारी का अपहरण मेरे बेटे मोहन ने किया भी हो, तो भी मैं नहीं समझता कि इसके लिए मुझे परिहार चुकाना पड़ेगा। उसकी ज़रूरत भी मुझे महसूस नहीं होती। मेरी बहन का अपहरण ग्रीकों ने किया। उन्होंने क्या हरज़ाना मुझे दिया?" उसकी आवाज़ में कर्कशता थी।

दूतों को खाली हाथ वापस भेजने पर वर्धन को कोई दुख नहीं हुआ। क्योंकि मोहन के साथ आयी भुवनसुँदरी के अद्भुत सौंदर्य को देखकर वह हतप्रभ रह गया। मोहन और वर्धन क्या, नगर का कोई भी नागरिक ऐसा नहीं, जिसने उसकी सुँदरता की वाहवाही ना की हो। उन्होंने तो इस काम के लिए मोहन को बधाई भी दी।

मोहन और भुवनसुँदरी का विवाह वैभवपूर्वक हुआ। वर्धन ने खुले आम घोषणा की "भुवनसुँदरी को वापस ले जाने के ग्रीकों के प्रयत्नों को मैं विफल करूँगा। किसी भी स्थिति में भुवनसुँदरी को उन्हें नहीं सौंपूंगा। मैं अपनी जान पर खेल जाऊँगा, पर ग्रीकों की दाल गलने नहीं दूँगा।"

(सशेष)

चन्दामामा की ख़बरें

पहले दंड, फिर सम्मान

संसार भर में सबसे लघु देश है वाटिकन। नगर का प्रथम नागरिक है पोप। हाल ही में इटली के सत्रहवीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध खगोल शास्त्रज्ञ गेलीलियो गेलिली के सम्मान में दो स्टाम्प्स निकाले गये हैं। साधारणतया स्टाम्पों का समीकरण करनेवालों में ही नहीं बल्कि इतिहास का अध्ययन करने वालों में भी यह घटना कुतूहल जगाती है। क्योंकि गेलीलिया को आजीवन जेल-दंड भी इसी चर्च ने दिया था। केथलिक चर्च का विश्वास था कि सौर मंडल का केंद्र-स्थल भूमि है। उन्होंने अपने इस विश्वास का पर्याप्त प्रचार भी किया था। किन्तु गेलीलिया ने अपने अनुसंधानों द्वारा प्रमाणित किया कि सौर मंडल का केंद्र-स्थल भूमि नहीं है। सौर

मंडल का केंद्र-स्थल है सूर्य। उन्होंने घोषणा की कि चर्च का यह विश्वास आधारहीन है। उन्होंने अपने अनुसंधानों द्वारा प्रमाणित किया कि भूमि सूर्य के चारों ओर घूमती रहती है। चर्च ने उसका विरोध और खंडन किया। उसने गेलीलिया पर दबाव डाला कि वह अपनी त्रुटि स्वीकार करे; अपने सिद्धांत को ग़लत माने। गेलीलिया अपनी राय पर डटे रहे। इसलिए १६३३ में उन्हें आजीवन कारावास का दंड दिया गया। फिर उस दंड को उसने गृह-क़ैद के रूप में परिवर्तित किया। उनकी मृत्यु १६४२ में हुई। आठ सालों तक वे बंदी बनकर रहे। उत्तरोत्तर विज्ञान-शास्त्रज्ञों ने गेलीलिया के सिद्धांत को सही घोषित किया। उनकी मृत्यु के तीन सदियों के बाद वाटिकन नगर ने उसका सम्मान किया।

मानव का निकट बंधु

शिलाज के रूप में परिवर्तित एक दाँत हाल ही में पाया गया। विज्ञान-वेत्ताओं का अभिप्राय
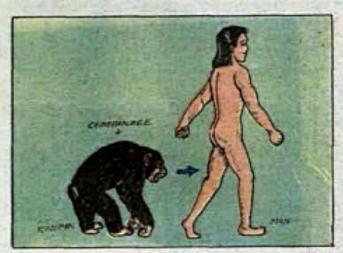
है कि यह दाँत चिंपांजी का हो सकता है। उनका समझना है कि यह नरवानर लगभग ४,४००,००० वर्षों पूर्व अफ्रीका के इथियोपिया के जंगलों में भटकता रहा होगा। कालिफोर्निया विश्वविद्यालय के टिम वैट का कहना है कि इस प्रकार के जंगली वातावरण में प्रथम बार चिंपांजी के होने का हाल ही में हमें प्रमाण मिले हैं। उनके अनुसंधान के अनुसार यह प्राणी मानव और चिंपांजियों के निकट का होगा। उनका मत है कि गोरिल्लाओं से भी मानव की निकटता चिंपांजियों में है।

मायावी सिद्ध

घुन का पक्का विक्रमार्क पुनः के पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा। उसे अपनी भुजाओं पर डाल लिया और यथावत् श्मशान की ओर जाने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "राजन्, परिश्रम और सहनशक्ति की तुम खान हो पहचान। तुम्हारी शक्ति और सामर्थ्य असीम हैं। तुम्हारा आग्रह प्रशंसनीय है। परंतु मेरा संदेह है कि तुम्हें इस क्षुद्र कार्य को करने के लिए किसी मांत्रिक ने प्रेरित किया है। अगर मेरा संदेह सच निकला तो इसका परिणाम वहुत ही दुखदायी होगा। तुम्हारे ये प्रयत्न निरर्थक प्रमाणित होंगे। तुम्हें निराश होना पड़ेगा। लक्ष्य - सिद्धि के अभाव में तुम्हें तीव्र दुख होगा, निराशा होगी और निराशा के गर्त में गिरकर तुम अनौचित्य कर बैठोगे। ऐसे एक राजकुमार की कथा तुम्हें सुनाऊँगा, जिसने एक मायावी सिद्ध की बातें सच मानीं, आँख मूँदकर उसकी बातों का विश्वास किया। उसकी बुद्धि निष्क्रिय

बेताल कथा

हो गयी । फलस्वरूप जीवन को नरक बना लिया।'' बेताल ने उसकी कथा यों सुनायी ।

अग्निमित्र प्रभातनगर का राजा था । अनंगवर्मा उसका इकलौता बेटा था । उसने निर्णय किया कि पड़ोसी देश उदयगिरि की राजकुमारी से पुत्र का विवाह करूँ और राजकुमारी को बहू बनाकर ले आऊँ। फिर पुत्र का राज्याभिषेक करूँ ।

एक दिन अनंगवर्मा कुछ सैनिकों को लेकर शिकार करने जंगल गया । दुपहर तक शिकार करते - करते युवराज बहुत ही थक गया। पास ही के सरोवर में उसने जल पिया और बरगद के एक पेड़ के नीचे लेटकर अपनी थकान दूर करने लगा । अकस्मात बग़ल ही की पहाड़ी गुफ़ा से उसे हल्की कराह सुनायी पड़ी । अनंगवर्मा ने तक्षण म्यान से तलवार निकाली और गुफ़ा के अंदर गया ।

गुफ़ा में अंधेरा ही अंधेरा था । एक कोने में छोटा - सा दीप टिमटिमाता हुआ उसे दिखायी पड़ा । उसी के पास हिरन के चर्म पर पद्मासन लगाकर एक वृद्ध सिद्ध बैठा हुआ था । वह वृद्ध ज़ोर से हाँफ रहा था । उसे देखते हुए लग रहा था कि किसी भी क्षण उसके प्राण - पखेरू उड़ सकते हैं; वह मृत्यु की शरण में जा सकता है ।

सिद्ध ने जैसे ही अनंगवर्मा को देखा, उससे कहा ''पुत्र अनंग, तुम सही समय पर आये हो। मेरे जीवन का यह अंतिम अध्याय है । मैं किसी भी क्षण मृत्यु की गोद में सो जाऊँगा। मुझे अन्यों के शरीर में प्रवेश करने की विद्या मालूम है । मृत्यु की गोद में जाने के पहले इस विद्या को किसी उत्तम व समर्थ व्यक्ति को सिखाने का मेरा संकल्प है । मैं तुम्हें वह मंत्र सुनाता हूँ । ध्यान से सुनो''। उसने तीन बार उस मंत्र का पठन किया और फिर कहा ''पुत्र, इस मंत्र को तीन बार मेरी ही तरह पढ़ना होगा। पठन में कोई भी त्रुटि नहीं होनी चाहिये । एक भी अक्षर इधर से उधर नहीं होना चाहिये। अब तो मंत्र तुम्हें भली - भांति याद हो गया होगा । अब उस मंत्र का पठन करो । अपने शरीर को त्यजो और मेरे शरीर में प्रवेश करो। मैं पुनः मंत्रोच्चारण करूँगा और इस जीवात्मा को छोड़ दूँगा और ऐसा आयोजन करूँगा, जिससे तुम मेरे शरीर में प्रवेश

कर पाओ।''

अनंगवर्मा ने इसके लिए अपनी स्वीकृति दी और सिद्ध के बताये गये मंत्र का तीन बार स्पष्ट रूप से पठन किया। तक्षण ही उसकी आत्मा उसके शरीर से पृथक् हो गयी। उसी समय सिद्ध ने भी मंत्रोच्चारण किया, जिससे उसकी आत्मा भी शरीर से बाहर आयी। यों दोनों के शरीरों में आत्माओं ने प्रवेश किया। आत्माओं की अदला - बदली हुई।

अब अनंगवर्मा के शरीर में सिद्ध की आत्मा और सिद्ध के शरीर में अनंगवर्मा की आत्मा थी।

अनंगवर्मा को सिद्ध का वृद्ध शरीर बहुत ही बोझीला लगा। वह तो युवक था। युवकों का उल्लास, इच्छाएँ, स्फूर्ति अनोखे होते हैं। इनमें शारीरिक दृढ़ता होती है। कमज़ोरी, ढीलापन होते ही नहीं। वृद्ध का शरीर पाकर उसे बड़ी असंतृप्ति होने लगी। युवराज के शरीर में प्रविष्ठ सिद्ध तो आनंद लूट रहा था। इसी आनंद को लूटने के लिए ही तो उसने यह षडयंत्र रचा। आसानी से राजकुमार को फँसाने में अपने को कृतकृत्य पाकर वह मन ही मन हँस रहा था।

थोड़ी देर बाद अनंगवर्मा ने हाथ जोड़कर सिद्ध से कहा ''महात्मा, आपने यह विद्या सिखाकर मेरा महोपाकर किया है। आपका यह ऋण कैसे चुका पाऊँगा ? अब आप अपने शरीर में जाइये और मैं अपने शरीर में चला जाऊँगा। गुफ़ा के बाहर मेरे सैनिक मेरी प्रतीक्षा में होंगे। बहुत ही शीघ्र मेरा राज्याभिषेक होनेवाला है। उदयगिरि की राजकुमारी से मेरा विवाह संपन्न होनेवाला है। मेरे ना पहुँचने पर वे बहुत घबरा जाएँगे, चिंतित हो जाएँगे''।

इसपर अनंग के रूप में परिवर्तित सिद्ध ठठाकर हँस पड़ा और बोला ''अब तो तुम मेरे जाल में फँस गये हो। तुम्हें कोई भी इस जाल से निकाल नहीं पायेगा। प्रभात नगर के राजा बनने की बहुत समय से मेरी तीव्र इच्छा है। आज से मैं ही अनंगवर्मा हूँ। प्रभात नगर के सिंहासन का वारिस हूँ। उदयगिरि की राजकुमारी मालविका मेरी पटरानी बनेगी। अच्छा, अब मैं चला'' कहते हुए वह गुफ़ा से बाहर आया।

सिद्ध के मायाजाल में फँसे अनंगवर्मा को
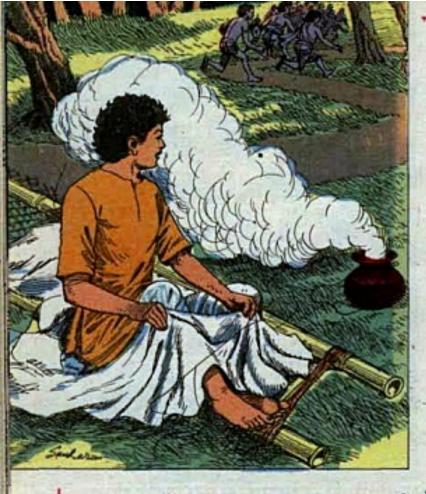
अपनी ग़लती पर पछतावा हुआ। वह मन ही मन व्यथित होने लगा। धीरे से वह उठा और गुफ़ा के बाहर आया। उसने देखा कि सिद्ध सैनिकों के साथ घोड़े पर बैठकर राजधानी की तरफ़ चला जा रहा है।

अनंगवर्मा ने भी राजधानी पहुँचने का निश्चय किया। चलने में उसे काफ़ी बाधा हो रही थी। फिर भी वह धीरे - धीरे चलने लगा। किन्तु थोड़ी दूर जाने के बाद वह रुक गया और एक पेड़ के नीचे बैठकर विश्राम करने लगा। उस पेड़ के पास ही एक मोर का मृत शरीर पड़ा हुआ था। उसने सोचा कि इस मोर के शरीर में प्रवेश करूँ और राजधानी पहुँचूँ। लेकिन सोच - विचार के बाद उस प्रयत्न को उसने छोड़ दिया।

इतने में उसने देखा कि एक परदेशी घोड़े पर बैठकर उसी तरफ़ आ रहा है। सिद्ध का रूपधारी अनंगवर्मा ने उससे विनती की कि उसे राजधानी पहुँचाये। वह परदेशी भी प्रभातनगर जा रहा था। उस बूढ़े की हालत पर उसे दया आयी और अपने घोड़े पर उसे बिठा लिया और चल पड़ा। थोड़ी ही देर में वे नगर की सरहद पर पहुँचे। अनंगवर्मा ने उसे धन्यवाद दिया और वहीं उतर गया।

अनंगवर्मा लोच में पड़ गया कि आगे उसे क्या करना है ? इतने में कुछ लोग एक शव को ढोये आ रहे थे। उन्होंने शव को एक जगह पर नीचे रखा और रोने लगे। अनंगवर्मा ने स्पष्ट देखा कि वह एक युवक का शव है।

बिना और सोचे - विचारे अनंगवर्मा ने तीन बार श्लोक को उच्चरित किया और सिद्ध का शरीर त्यजकर उस युवक के शरीर में प्रवेश किया। शव जैसे ही जीवित होकर उठकर बैठ गया तो वे लोग भय से काँप उठे। वे कहने लगे "बाप रे, यह गूंगा तो पिशाच बन गया।" कहते हुए वे वहाँ से भाग गये।

अनंगवर्मा को जब ज्ञात हुआ कि वह युवक गूँगा है तो, उसे बहुत ही दुख हुआ। उसे लगा कि उसका प्रयत्न व्यर्थ हुआ है। जब उसने देखा कि उसकी उँगली में सोने की एक अंगूठी भी है तो सोचा कि कम से कम इसी को अपना भाग्य मानता हूँ।

अनंगवर्मा ने वह अंगूठी सोने की एक दुकान

में बेची और उस धन से एक घोड़ा खरीदा।

वह घोड़े पर सवार होकर उदयगिरि पहुँचा। उसने वहाँ लोगों को कहते हुए सुना भी था कि राजकुमारी मालविका से उसकी शादी की बात भी चल रही है।

उसने संकेतों के द्वारा द्वारपालकों से बताया कि एक बहुत ही आवश्यक काम पर तक्षण ही महाराज से मिलना है। वे उसे राजा रणवर्मा के पास ले गये।

उस समय रणवर्मा आस्थान के दैवज्ञ चैतन्यशर्मा से बातें कर रहा था। अनंगवर्मा ने संकेतों द्वारा अपनी कहानी बतायी। उसने बताने का प्रयत्न किया कि वह एक सिद्ध पुरुष के हाथों कैसे वंचित हुआ है। किन्तु रणवर्मा विषय को पूरी तरह से समझ नहीं पाया। तब दैवज्ञ चैतन्यशर्मा ने राजा को स्पष्ट समझाया।

रणवर्मा अपने होनेवाले दामाद अनंगवर्मा के साथ किये गये छल की कहानी सुनकर आग - बबूला हो गया। उसने एक पत्र में पूरा विवरण लिखवाकर एक दूत के ज़रिये अनंगवर्मा के पिता के यहाँ भिजवाया।

राजा अग्निमित्र ने पत्र पढ़कर जान लिया कि अब उसके पुत्र की जगह पर कोई और व्यक्ति उसी रूप में है तो उसके क्रोध का आर - पार ना रहा। उसने सिपाहियों को आज्ञा दी "अब जो व्यक्ति अनंगवर्मा के रूप में है, वह तुम्हारा युवराज नहीं है। वह एक मायावी है। वह एक वृद्ध सिद्ध है। उसे तक्षण बंदी बनाओ।"

अनंगवर्मा रूपधारी वृद्ध सिद्ध को अब ज्ञात हो गया कि बात खुल गयी है, तो उसने सिपाहियों
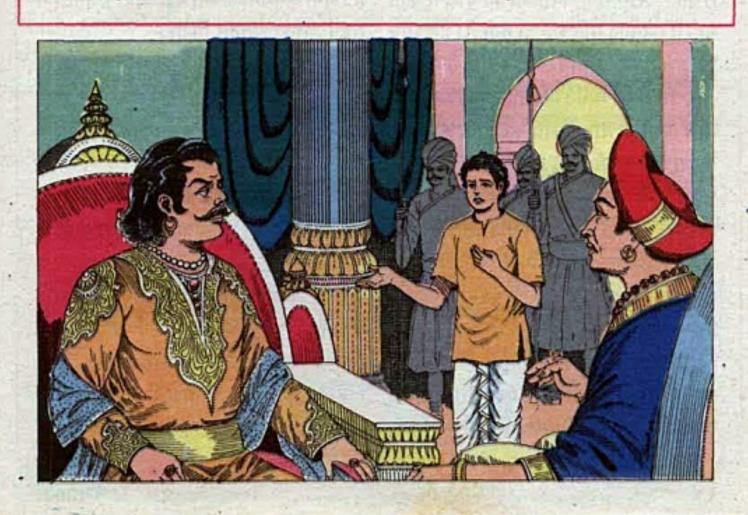
से कहा "लगता है, पिताश्री की बुद्धि ठिकाने नहीं है। उनकी मति भ्रष्ट हो गयी है। हमें शीघ्र ही कुछ करना होगा। उन्हें जंजीरों से बाँधिये और उस कमरे में बंद कर दीजिये। राजवैद्य से बातें करने के बाद निर्णय करेंगे कि आगे क्या करना है ?" सिद्ध तो दुष्ट था। था बहुत ही चालाक भी। अपने सपने को सच बनाने के लिए वह कुछ भी करने को तैयार था। इसलिए उसने राजा को पागल घोषित किया और अपने को तत्कालीन ख़तरे से बचा लिया। ऐसा करके वह निश्चिंत हो गया।

दूत ने यह सब कुछ अपनी आँखों देखा। वह उदयगिरि लौटा और पूरा वृत्तांत राजा रणवर्मा को बताया। रणवर्मा ने निश्चय किया कि अगर सिद्ध के हाथों बंदी बने अग्निमित्र की रक्षा करनी हो तो एक ही उपाय है और वह है युद्ध। वह तक्षण ही युद्ध की तैयारियों में मग्न हो गया।

किन्तु इसके एक सप्ताह के अंदर ही अनंगवर्मा रूपधारी सिद्ध विषैले सर्प के डसने से मर गया। वह उस समय अंत:पुर में सोया हुआ था। उसे उसके पाप का दंड मिल गया। उसने कितने ही सुखद सपने देखे थे, लेकिन क्षण भर में वे सारे के सारे ढ़ह गये।

अब राजा बंधनों से मुक्त हो गया। उसने नगर के सब नागरिकों को घोषणा के द्वारा बतलवाया कि दुष्ट सिद्ध के हाथों अनंगवर्मा की क्या स्थिति हुई है और उसे कितने कष्ट सहने पड़े हैं। गूँगा अनंगमर्मा अपना देश लौटा। जनता ने सहर्ष उसका स्वागत किया।

अंत:पुर के कक्ष में पड़े अपने निर्जीव शरीर को देखकर अनंगवर्मा रो पड़ा। संकेतों से उसने अपने माता - पिता को बताया कि वे उस शव की अंत्यक्रियाएँ करावें।

बेताल ने विक्रमार्क को यह कहानी सुनायी और कहा "राजन्, अनंगवर्मा का व्यवहार पहले से ही बेतुका हैं, असंगत है। सिद्ध से वंचित वह मृत मोर के शरीर में प्रविष्ट हो सकता था और प्रभातनगर बहुँचकर अपनी संपूर्ण गाथा अपने पिता को बता सकता था। ऐसा ना करके उसने एक गूँगे के शरीर में प्रवेश किया। क्या यह उसका अविवेक नहीं ? अंत:पुर में अपना मृत

शरीर पड़ा हुआ था। अपने माता - पिता से उसका यह कहना कि इसकी अंतिम क्रियाओं का प्रबंध कीजिये, यह उसकी मूर्खता नहीं तो और क्या है ? मैं तो दावे के साथ कहूँगा कि यह उसकी मूर्खता की पराकाष्ठा है। अनंगवर्मा अपने शरीर से सिद्ध के शरीर में और गूँगे युवक के शरीर से मंत्रबल पर प्रवेश कर चुका था। अपने उसी मंत्रबल पर सिद्ध के शरीर में वह प्रवेश कर सकता था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। इसका क्या कारण हो सकता है ? क्या वह उन मंत्रों को भूल गया ? उसकी मति क्या निष्क्रिय हो गयी कि वह इस बारे में सोच भी नहीं पाया ?''

विक्रमार्क ने उसके संदेहों को दूर करते हुए कहा ''अनंगवर्मा कुशाग्र बुद्धिशाली है। इसीलिए इतनी बड़ी विषम परिस्थिति में भी उसने कोई अनुचित कार्य नहीं किया। मंत्रोच्चारण करके अगर वह मोर के शरीर में प्रवेश करता तो तो पुनः मंत्रोच्चारण का प्रश्न ही नहीं उठता। अपने निजी शरीर को पाना संभव ही नहीं हो पाता। मोर मंत्रों का पठन नहीं कर सकेगा ना? वह परदेशी के साथ अपने राज्य की सरहदों तक जाकर वहीं रुक गया, इसका भी एक प्रबल कारण था। मायावी सिद्ध नगर में अनंगवर्मा के नाम से प्रचलित है। राजकुमार होने के नाते वह कुछ भी कर सकता है। अगर उसे मालूम हो जाए कि सिद्ध के रूप का अनंगवर्मा नगर में आया हुआ है तो अवश्य ही उसका अहित करेगा। शायद मार भी डाले। गूंगे के शरीर में प्रवेश करने के बाद ही वह जान पाया कि वह गूँगा है। गूँगा तो मंत्र - पठन स्पष्ट रूप से कर नहीं पायेगा। ऐसा प्रयत्न तो अविवेक से भरा प्रयत्न प्रमाणित होगा। इसीलिए उसने अपने माता पिता से उस शव की अंतिमक्रियाएँ कराने के लिए कहा। यह जानते हुए भी कि यह उसी का शरीर है। अतः यह नित्संकोच कहा जा सकताहै कि हर विषय में, हर दशा में अनंगवर्मा का व्यवहार समुचित तथा संगत रहा है।''

राजा का मौन भंग करने में बेताल फिर कृतकृत्य हुआ। वह शव सहित ग़ायब हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

(- आधार - विमल देवी सिन्हा की रचना)

दो कवि

चंद्रपुरी के दरबार में विष्णुशर्मा नामक एक कवि था। अन्य कवियों की रचनाओं से जब वह संतुप्त होता तो वह उनकी प्रशंसा करता था। उसी दरबार में नारायण शास्त्री नामक एक दूसरा भी कवि था। दूसरे कवियों की श्रेष्ठता वह किसी भी हालत में स्वीकार करता ही नहीं था।

विष्णुशर्मा से अगर कोई पूछता कि नारायण शास्त्री के बारे में आपकी क्या राय है तो वह कहता "नारायण शास्त्री अच्छे कवि हैं, उनकी कविताएँ भी उत्तम हैं। इसमें कोई संदेह ही नहीं"।

विष्णुशर्मा के बारे में नारायण शास्त्री से आगर कोई पूछता तो वह निधड़क बोलता कि कहने को क्या रखा है। बात तो साफ़ है। उनकी रचनाओं में कविता के गुण बहुत ही कम हैं, उनमें परिपक्वता नहीं है। उन्हें तो और मेहनत करनी पड़ेगी।"

यह बात राजा के कानों में पड़ी। एक बार जब कवि-सम्मेलन हो रहा था तब उसने विष्णुशर्मा से पूछा "शर्माजी, आप तो श्री नारायण शास्त्री की कविताओं की प्रशंसा करते रहते हैं। किन्तु श्री नारायण शास्त्री आपकी कविताओं में त्रुटि पाते हैं। इसपर आपका क्या विचार है?"

इसपर विष्णुशर्मा हँसा और बोला "कविता के स्तरों में हम दोनों में कमी-बेशी हो सकती है। परंतु हाँ, एक विषय में हम दोनों से भूल हुई है। आज तक उनकी कविता के बारे में मेरी जो राय है और मेरी कविता के बारे में उनकी जो राय है, दोनों के दोनों ग़लत हैं।

इन बातों के पीछे, जो गूढार्थ है, नारायण शास्त्री समझ गया और शरम से अपना सिर नीचे झुका लिया।

- बी रघुराम

जामुन का पेड़

त्रिचिनापल्लि के समीप ही जंबुकेश्वरालय नामक एक सुप्रसिद्ध शिवालय है। मंदिर के प्रांगण में ही जामुन का बड़ा पेड़ है। उसकी फैली हुई टहनियों को देखकर लगता है मानों मंदिर के लिए पंदाल लगाया गया हो। यह यहाँ की विशिष्टता है। जामुन का पेड़ केवल शिव का ही प्रिय पेड़ नहीं बल्कि गणेश तथा श्रीकृष्ण का भी प्रिय वृक्ष है, ऐसा हिन्दुओं का विश्वास है। मेघों के अधिपति जामून के पेड़ के रूप में जन्मे हैं, इसलिए विश्वास किया जाता है कि इसके फल भी मेघों की तरह काले होते हैं। भक्त श्रीकृष्ण का वर्णन करते हुए कहते हैं कि नीलमेघ श्याम भी जामुन के ही रंग के हैं। बौद्ध भी जामुन के पेड़ को पवित्र मानते हैं।

वृक्ष-शास्त्र में जामुन को सिजिक्रियं कुमुनि (लिन) कहते हैं। यह पहले इक्वेनिया जांबोलाना लांक जाति का वृक्ष माना जाता था।

हमेशा हरे दीखनेवाले जामुन के वृक्ष ऊँचे होते हैं। वृक्ष का प्रधान तना सीधा ना होकर शाखाओं के साथ कहीं कहीं झुका हुआ होता है। जामुन के वृक्ष देश भर में पाये जाते हैं। जब इनमें बौर हो, बौंडी हो, तब वातावरण का सूखा होना आवश्यक है। साधारणतया मार्च - मई के मध्य इनमें बौर होता है। हरे और सफ़ेद रंगों में छोटे-छोटे फूल गुच्छों में होते हैं। फल काले रंग में चमकते रहते हैं। फलों का रस लाल और नीले रंग का होता है। जामुन के फल ठंडक पहुँचाते हैं। पाचन - शक्ति की वृद्धि करते हैं। इनके फल, पत्ते, बीज तथा छाल औषधियों के उपयोग में लाये जाते हैं। इनकी लकड़ी काफ़ी दृढ़ होती है, इसलिए नावें बनाने के काम में इनका उपयोग होता है।

आदिकवि वाल्मीकि

हजारों वर्ष पूर्व हमारे देश में जंगल ही जंगल थे। किसी एक जगह से दूसरी जगह पहुँचना हो तो जंगलों से ही गुज़रना पड़ता था। उन दिनों में चोरों और लुटेरों का भी प्राबल्य था।

एक दिन एक मुनि रामनाम का स्मरण हुआ अकेले ही जंगल से गुज़र रहा था। किसी ने 'ठहरो' कहकर पुकारा तो पलटकर देखा। हाथ में एक कुल्हाड़ी लिये एक दृढ़काय पुरुष सामने आकर खड़ा हो गया और रास्ता रोक लिया।

मुनि ने पूछा "तुम कौन हो?"

"क्या तुम्हें दिखायी नहीं पड़ता कि मैं कौन हूँ? मैं एक लुटेरा हूँ। चुपचाप अपने पास जो है, मेरे हवाले कर दो और चलते बनो"। वह गरजकर बोला।

मुनि ने पूछा "कब से इधर से गुज़रते हुए यात्रियों को लूटते आ रहे हो?"

"बहुत अर्से से, पर इससे तुम्हारा क्या मतलब? पहले मैने जैसा कहा, वैसा करो" आँखें लाल करते हुए लुटेरे ने आज्ञा दी।

"मैं वही करूँगा, जैसा तुम चाहते हो। परंतु बताना सही, यह काम किसके लिए कर रहे हो?" मुनि ने पूछा।

"ऐसा बेतुका सवाल क्यों कर रहे हो ? मैं लूटूँगा तो आख़िर किसके लिए लूटूँगा? अपने परिवार के लिए ही मैं यह काम कर रहा हूँ। उनके पालन - पोषण के लिए कर रहा हूँ।" लुटेरे ने कहा।

"पत्नी और संतान के लिए इतना अधर्म कर रहे हो, दूसरों पर अत्याचार कर रहे हो, घोर कृत्य कर रहे हो। क्या तुम नहीं जानते, इससे कितना पाप कमा रहे हो। क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे इन पापों में तुम्हारी पत्नी और तुम्हारी संतान भी भागीदार होंगीं?" मुनि ने निर्भय हो पूछा।

"क्यों भागीदार नहीं होंगे? यह तो सब कुछ मैं उन्हीं के लिए तो कर रहा हूँ। अवश्य ही इनमें उनका भी भाग है।" लुटेरे ने अपनी कुल्हाड़ी नीचे रखते हुए कहा।

"तुम्हारे पाप का भार तुम्हें ही ढोना पड़ेगा। देखो पुत्र, तुम्हारे पापों में कोई और भागीदार नहीं होगा। अगर तुम्हें मेरी बातों में शंका हो तो घर जाकर पूछो" मुनि ने कहा।

लुटेरा तक्षण ही घर गया। अपनी पत्नी और बच्चों को बुलाया और मुनि की कही सारी बातें सुनायीं। फिर उसने उनसे पूछा "मेरे पापों को आप लोग भी बाँटेंगे ना?" उसे विश्वास था कि वे 'हाँ' कहेंगे।

"यह कैसे संभव है। भला हम क्योंकर भागीदार होंगे ? परिवार को संभालना तुम्हारा कर्तव्य है। हमारा पालन - पोषण करना तुम्हारा धर्म है, तुम्हारी जिम्मेदारी है। इसके लिए तुम क्या करते हो, इससे हमारा कोई संबंध नहीं। हमारा तुम्हारे पापों से कोई वास्ता नहीं। मुनि ने जो कहा, शत प्रतिशत सही है" पत्नी ने उत्तर दिया।

बच्चों ने माँ की ही बात दुहरायी।

उनके इस उत्तर से लुटेरा स्तब्ध रह गया। वह दौड़ा - दौड़ा मुनि के पास गया और उसके पैरों पर पड़कर बोला "उस पाप के गर्त से मेरा उद्धार करो" उसके सुर में दीनता थी।

करूणामय उस मुनि ने उसे राम नाम का उपदेश दिया और कहा "भक्ति और श्रद्धापूर्वक इस नाम का स्मरण करते रहना। तुम्हारे समस्त पाप धुल जाएँगे"।

लुटेरा एक पेड़ के नीचे आसन लगाकर बैठ गया और राम नाम स्मरण करने लगा। दिन, महीने, साल बीत गये।

मुनि एक बार उसी रास्ते से जब गुजर रहा था, तब उसे एक बाँबी से राम नाम सुनायी पड़ा। मुनि ने बाँबी को खोदा। बाँबी से जटाओंसे आच्छादित एक मुनि उठा। वही मुनि था, एक समय का लुटेरा। उसका पहले का नाम था रत्नाकर। वाल्मीकि का अर्थ है बाँबी। बाँबी से उत्पन्न होने के कारण उसका नाम पड़ा वाल्मीकि।

तमासा नदी के तट पर आसीन होकर वाल्मीकि तपोजीवन व्यतीत करने लगे। एक दिन नदी में स्नान करके जब कुटीर लौट रहे थे तो उन्होंने सुंदर दो क्रौंच पक्षियों की जोड़ी देखी। इतने में एक भील ने जोड़ी में से एक पक्षी को अपने बाण का शिकार बनाया। यह दृश्य देखकर वाल्मीकि का हृदय दया से पिघल गया, द्रवित हो गया। शोक, श्लोक के रूप में उसके मुँह से उच्चरित हुआ। यों वे आदिकवि हुए।

इसके उपरांत उनसे रचित रामायण जगत-प्रसिद्ध संस्कृत का काव्य है। उसका अनुवाद संसार की अनेकों भाषाओं में हुआ, जिसे पढ़कर करोड़ों लोग भक्ति में तन्मय हो गये।

भक्ति, श्रद्धा तथा आत्मविश्वास से जो मनुष्य जीवन में श्रम करेगा और जो अपने जीवन को उत्तम, सार्थक तथा आदर्श बनाना चाहेगा, उसके लिए स्फूर्ति-स्रोत हैं महामुनि वाल्मीकि। उन्होंने प्रमाणित किया कि इन सद्गुणों से पूरित मनुष्य उत्तमोत्तम मनुष्य बन सकता है। वे स्वयं इसके उदाहरण हैं।

क्या तुम जानते हो?

१. मेट्रिक पद्धति किस देश में पहले - पहल अमल में लायी गयी ?
२. 'देवताओं की घाटी' हमारे देश में कहाँ है ?
३. सम्राट अलक्ज़ांडर जब किशोर था, तब उसे एक घोड़ा दिया गया। उस घोड़े का क्या नाम है ?
४. हमारे देश में 'गुलाबी रंग नगर' के नाम से प्रसिद्ध नगर कौन-सा है ?
५. 'जूडो' आत्मरक्षा की कला है। इसे किसने प्रारूप दिया ?
६. नाट्यकला संबंधी विवरण प्रस्तुत करनेवाले संस्कृत ग्रंथ का क्या नाम है ? उसके रचयिता कौन हैं ?
७. एक त्योहार 'गुलामों का त्योहार' के नाम से प्रसिद्ध है। इस त्योहार में मालिक गुलामों को खाना परोसते हैं। इस रोमन त्योहार का क्या नाम है ?
८. शून्य किस भारतीय शास्त्रज्ञ का आविष्कार है ?
९. 'हेल्थ स्टाम्प्स' को कौन - सा देश प्रकाशित करता है ? उनकी खासियत क्या है ?
१०. भूमि सूरज के चारों ओर घूम आये, इसके लिए कितना समय लगता है ?
११. जापान का अति प्राचीन ग्रंथ कौन - सा है ?
१२. वे अमेरिकी अध्यक्ष कौन हैं, जो प्रथम बार भारत आये थे ?
१३. संसार का सबसे बड़ा पुस्तकालय कौन - सा है ?
१४. टोक्यो नगर का प्राचीन नाम क्या है ?
१५. पहले पहल गेलीलियो ने क्या खोज निकाला ?
१६. अपने ही देश का चित्र उसी देश के झंडे पर है। उस देश का क्या नाम है ?

उत्तर

१. फ्रान्स
२. हिमालय प्रदेश की कुलु घाटी
३. बूसीपलस
४. राजस्थान की राजधानी जयपुर
५. डा. जिगोरो कानो, १८८२ में
६. नाट्य शास्त्र, भरत मुनि
७. शाटर्नलिया
८. आर्यभट्ट
९. न्यूज़लांड, उसकी आमदनी स्वास्थ्य संस्थाओं को दी जाती है।
१०. ३६५ दिन, पाँच घंटे, ४८ मिनिट, ४६ सेकंड
११. कोजिकिक - प्राचीन जापान का इतिहास लिपिबद्ध है।
१२. ड्वैट ऐसेन होवर, १९५६ में
१३. मास्को का लेनिन स्टेट पुस्तकालय
१४. ईडो
१५. लोलक
१६. सैप्रस

नींद

शंखवर गाँव के चारों ओर पथ्थरों के टीले हैं। गर्मी का मौसम है। कड़ी धूप है। यद्यपि सोलंकी ने एक एकड़ की ज़मीन के बीच सुँदर और बड़ा घर बनवाया, लेकिन इस गर्मी की वजह से वह सो नहीं पा रहा था। बहुत कोशिश की, पर नींद नहीं आ रही थी।

नौकरों ने पंखे चलाये, किन्तु उनसे भी गरम हवा ही चल रही थी। खस की टट्टियाँ लटकायी गयीं और समय - समय पर उनपर पानी छिड़काया गया, फिर भी हवा गरम ही थी। सोलंकी बेचैन ही था।

नींद ना होने से सोलंकी अपने को अशांत महसूस करने लगा। बात - बात पर वह चिढ़ने लगा। दूसरों की नींद भी इस वजह से हराम हो गयी। परंतु विचित्र बात तो यह है कि इस गर्मी में भी कुछ लोग मज़े से सो रहे थे। सोलंकी ही एक ऐसा आदमी था, जो सो नहीं पाया।

''मुझसे वेतन लेकर मेरे दिये पैसों पर पल रहे हो। मैं नींद के अभाव में छटपटा रहा हूँ और तुम लोग घोड़े बेचकर सो रहे हो?'' क्रोधित सोलंकी नौकरों पर टूट पड़ा।

फिर अपनी पत्नी और संतान पर भी नाराज़ होता हुआ बोला ''मेरी ही वजह से तुम सुख भोग रहे हो। यह ऐशोआराम मेरी कमाई से है। घर का ईंट-ईंट मेरी मेहनत का फल है। मेरी ही वजह से सब लोग तुम्हारा आदर - सत्कार कर रहे हैं। सब कुछ मेरा होते हुए भी तुम लोग सुख भोग रहे हो, आराम से सो पा रहे हो और मैं? मुझे तो नींद ही नहीं आ रही है। इस गर्मी ने तो मेरी नाक में दम कर रखा है।''

सोलंकी का हाल उनसे देखा नहीं गया। एक ने वैद्य को बुलवाया तो उसने सोलंकी की नब्ज़ देखी और कहा ''आपकी तबीयत बिल्कुल ठीक है। लगता है, आपकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं हैं।'' एक मांत्रिक से तावीज़ बंधवायी गयी। पूजाएँ करवायी गयीं। परंतु कोई फ़ायदा

रामानंद शर्मा
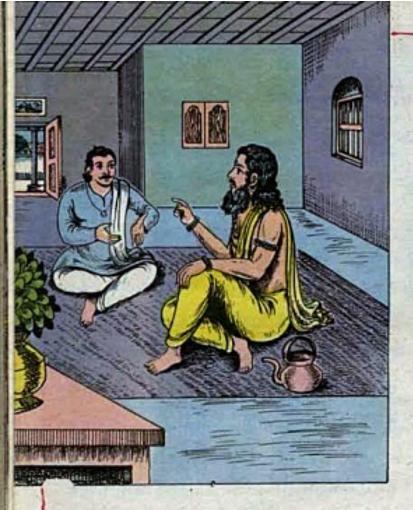
नही हुआ। इन परिस्थितियों में एक साधु उसके घर आया। उसने सोलंकी के बारे में पूरी जानकारी पाने के बाद कहा "महाराज, पैसे कमाने के लिए आप रात-दिन मेहनत कर रहे हैं। किन्तु एक मुख्य बात आपने भुला दी है। यह जीवन पानी के एक बुलबुले के समान है। किसी भी क्षण वह फट सकता है"।

"स्वामी, मैं भी जानता हूँ कि यह जीवन अशाश्वत है। किन्तु यह जानकर भी हम कर क्या सकते हैं?" सोलंकी ने पूछा।

"भगवान ने मनुष्य के जीवन को दिनों में विभाजित किया है। हर दिन की एक रात होती है और एक दिन। दिन प्रकाश से भरा हुआ होता है। मनुष्य की बुद्धि तथा परिश्रम केउपयोग का यह समय है। रात तो अंधकार से भरा हुआ होता है। उस समय मनुष्य को सुख की निद्रा की गोद में चला जाना चाहिये। निद्रा मनुष्य के लिए मृत्यु के समान है। भगवान ने निद्रा की सृष्टि भी इसीलिए की कि वह मृत्यु के बारे में जान सके। निद्रा के कारण मनुष्य हर दिन तात्कालिक रूप से मरता है और फिर जीवित होता है। इस तरह सोते - जागते एक दिन मनुष्य शाश्वत रूप से मिट जाता है।" साधु ने उसे समझाया।

सोलंकी ने उसकी बातों की गंभीरता पर ध्यान ना देते हुए कहा "यह बात तो सब जानते हैं"।

"परंतु हाँ, जो इस बात को जानते हैं, इस सत्य से जो अवगत हैं, वे तो सुख की नींद सोते हैं। कुछ समय के लिए सब बातों को भुला देना आवश्यक है। अगर भुला नहीं पाओगे तो नींद भी तुमसे दूर भागेगी।" साधु ने कहा।

"मेरे कारण इतने लोग आराम से ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं? इनकी जिम्मेदारी मुझपर है। एक क्षण भी अपनी इस जिम्मेदारी को भुलाकर कैसे सो पाऊँगा? नींद कैसे आयेगी?" सोलंकी ने अपना संदेह व्यक्त किया।

"मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें एक मनुष्य दिखाऊँगा"। साधु ने कहा।

सोलंकी साधु के शिष्य की तरह अपना वेष बदलकर उसके साथ - साथ गया। वे दोनों अचंचल नामक एक व्यक्ति के घर गये। उसने

दोनों का सत्कार किया और उन्हें स्वादिष्ट खाना खिलाया।

साधु ने उसे आशीर्वाद देते हुए पूछा ''दिन सुख से कट रहे हैं ना?''

अचंचल हँसकर बोला ''मेरी माँ बीमार है। खाट पर पड़ी रहती है। चिकित्सा के लिए बहुत - सा धन खर्च हो रहा है। मेरी पत्नी दिन रात उसकी सेवा में लगी रहती है। फिर भी मेरी माँ किसी ना किसी बहाने उसे गालियाँ देती रहती है। सास और बहू के ये झगड़े हमारे घर में रात - दिन होते रहते हैं। मेरा बड़ा लड़का घर की जिम्मेदारियों से दूर रहता है। वह खर्च भी ज़रूरत से ज्यादा करता है। दूसरा, अच्छा लड़का है। लेकिन उसके भाग्य में विद्या नहीं। इस साल फसलें भी अच्छी नहीं हुईं। घर को गिरवी रखकर अपने दिन गुज़ार रहा हूँ''।

साधु ने पूछा ''तुम्हारी समस्याएँ तो बड़ी ही कठोर हैं। इन समस्याओं के दलदल से कैसे बाहर आ पाओगे ? क्या कोई उपाय सोचा है?''

''मैं अपनी तरफ़ से पूरा प्रयत्न कर रहा हूँ, परिश्रम कर रहा हूँ। फिर भगवान की इच्छा''अचंचल ने निर्लिप्त होकर कहा।

ठीक दुपहर के समय अचंचल ने साधु से कहा ''स्वामी, अंधेरा हो जाने के पहले ही मैं लौट आऊँगा। एक ज़रूरी काम पर मुझे बाहर जाना है। आप बुरा ना मानियेगा। मेरी प्रतीक्षा कीजिये'' कहकर वह बाहर से निकला।
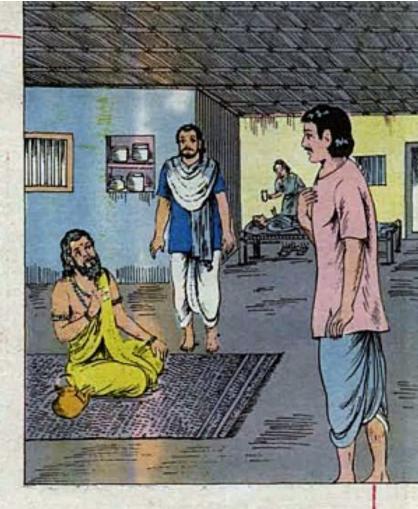
साधु और सोलंकी छिपे-छिपे उसके साथ गये। गाँव के कोने में अमरूदों का एक बग़ीचा है। अचंचल वहाँ गया और अपना दुपट्टा फैलाकर क्षण भर में मस्त सो गया।

''देखा सोलंकी, निद्रा मनुष्य को दिया हुआ भगवान का वरदान है। थोड़ी देर के लिए ही सही, इससे मनुष्य अपने कष्टों को भूल जाता है। अचंचल समस्याओं से घिरा हुआ है, फिर भी इस वरदान का उपयोग कितनी अच्छाई से वह कर पा रहा है।'' साधु ने कहा।

सोलंकी नाराज़ी जताता हुआ बोला ''इतनी समस्याओं का सामना उसे करना है, फिर भी यह तो मस्त सो रहा हैऔर अपना अमूल्य समय व्यर्थ कर रहा है। इसे अपनी
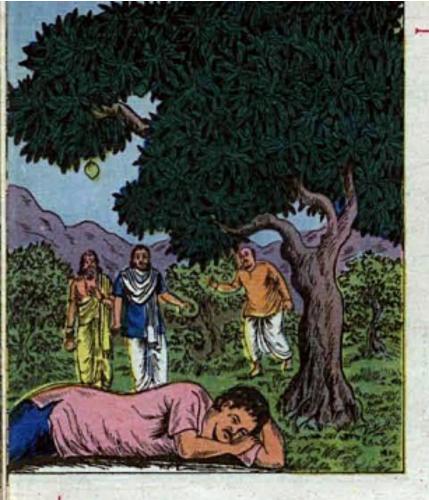
जिम्मेदारी नहीं मालूम। इसीलिए गरीबी में वह सड़ रहा है। अभी इसे जगाऊँगा और उसे बताऊँगा कि समय का सदुपयोग कैसे करना चाहिये। उसे समझाऊँगा भी कि धन कैसे कमाना है। लेकिन ऐसा करने के पहले इसे खूब डाँटूंगा''।

''ठीक है, जैसा तुम चाहते हो, वैसा ही करो'' साधु ने कहा। सोलंकी उसे जगाने ही वाला था कि पेड़ के पीछे से एक आदमी ने आकर उसका हाथ पकड़ लिया और कहा ''क्या तुम्हारा दिमाग़ कहीं घास चरने गया? मालूम नहीं, सोते हुए आदमी को जगाना नहीं चाहिये''?

''तुम मुझे रोकनेवाले कौन होते हो? इसे जगाने से तुम्हारा क्या नुक़सान होगा?'' सोलंकी ने पूछा।

''अपनी बात में बाद कहूँगा, पहले ज़रा बताना कि तुम कौन हो?'' उससे आदमी ने पूछा।

सोलंकी ने कहा ''धन की कमाई के बहुत-से रास्ते मुझे मालूम हैं। अचंचल को पैसों की ज़रूरत है। उसे तो ऐसे समय में सोना नहीं चाहिये। उसे जगाकर बताना चाहता हूँ कि पैसे कैसे कमाने चाहिये?''

''रातों में सोने के लिए इसके पास समय नहीं होता। दो दुकानदारों के पास इसे हिसाब लिखना पड़ता है। उन दोनों के कहे मुताबिक उसे ये काम रात ही को करनी हैं, दिन में नहीं। अलावा इसके, इसकी माँ रातों में खूब खाँसती रहती है, हाँफती रहती है। किसी का उसके पास रहना अनिवार्य है। बीच-बीच में वह बहू को कोसने लगती है। और बहू भी चुप नहीं रहती। ईंट से ईंट बजाती है। यही कारण है कि यह दिन में यहाँ आकर सोता है। वह भी, जब कि खेत के काम ना हों। ऐसे आदमी को जगाना क्या उचित है?'' उस व्यक्ति ने पूछा।

सोलंकी ने पूछा ''तुम कौन हो?''

''मैं इस बग़ीचे का मालिक हूँ। मुझे घर पर कोई काम करने नहीं देते। मेरे पास समय ही समय है। जीवन में कुछ साधने की मेरी आकांक्षा है, पर मालूम नहीं कि क्या करूँ और कैसे करूँ? इस कारण रातों में मुझे नींद नहीं आती। मैंने जब से देखा कि अचंचल यहाँ आकर सो रहा है तो मैं भी यहाँ आकर सोने का प्रयत्न कर रहा हूँ''।

आशा भरे स्वर में सोलंकी ने पूछा ''तो क्या

तुम यहाँ खूब सोते हो?''

''नहीं। सोने के लिए आसपास की हालत तथा वातावरण प्रधान नहीं है। निद्रा का संबंध मन से है। इसलिए प्रशांत मन का होना आवश्यक है। हमारे बगीचे में ऐसी कोई ख़ासियत नहीं, जिससे नींद आ सके।'' व्यक्ति ने कहा।

''कितने और दिन इसी तरह अचंचल को सोते हुए और समय व्यर्थ करते हुए देखना चाहते हो?'' चिढ़ते हुए सोलंकी ने पूछा।

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया ''अच्छी तरह से सो पाना कोई साधारण भाग्य नहीं। वह तो अहोभाग्य है। ऐसे भाग्यवान को देखते रहने से सच्चा आनंद मिलता है। अचंचल की निद्रा का कोई भंग ना करे, इसी के लिए मैं यहाँ आता हूँ। समझो, मैं उसकी रखवाली कर रहा हूँ। ऐसा करते हुए मुझे आत्म-तृप्ति होती है। लगता है, मैं एक अच्छा काम कर रहा हूँ। इसी वजह से आजकल मैं रातों को खूब सो पाता हूँ''।

उस व्यक्ति की बातों से सोलंकी की आँखें खुल गयीं। हाँ, वह कमा रहा है दूसरों के लिए ही, लेकिन उनका सुख उससे देखा नहीं जा रहा है। वे आराम से सो पाते हैं और वह सो नहीं पा रहा है, इसका उसे बहुत दुख है। इसपर वह उनसे नाराज़ भी हैऔर उनसे ईर्ष्या भी करता है। इसका मतलब यह हुआ कि उसका मन साफ़ नहीं है, इसीलिए उसे नींद नहीं आती। उस अचंचल की भी निद्रा भंग करनी चाही, जिससे उसका कोई रिश्ता नहीं। वह उस व्यक्ति की तरह उसकी निद्रा को देखकर आनंद लूट नहीं सका। वह तो अब तक उनसे ईर्ष्या करता रहा, जिन्हें निद्रा का सुख प्राप्त हुआ। जिस सुख से वह वंचित था, जो उसके भाग्य में बदा नहीं था।

सोलंकी ने उस व्यक्ति की भरपूर प्रशंसा की। साधु को धन्यवाद दिया और अपना घर लौटा।

तब से वह हृदयपूर्वक दूसरों की सहायता करने लगा। दूसरों के आनंद को देखकर वह अब नहीं जलता। इस बात पर उसे दुख नहीं होता थ कि जो वस्तु मेरे पास नहीं, वह दूसरों के पास है। कहना होगा कि उसके जीवन का एक नया अध्याय ही प्रारंभ हुआ। अब उसके लिए निद्रा कोई समस्या ही नहीं।

अविश्वास
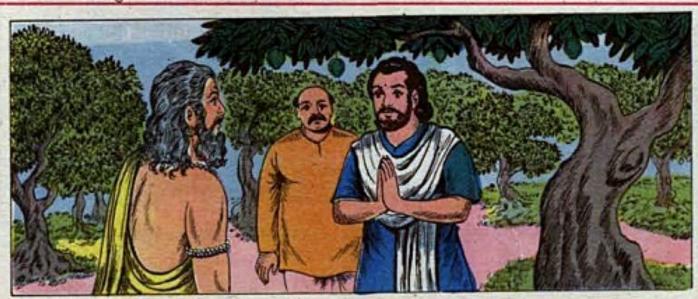
सुँदर एक ग़रीब युवक था। उसके ना ही माँ - बाप थे ना ही कोई रिश्तेदार। ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए आवश्यक कोई भी विद्या उसे मालूम नहीं थी।

एक दिन रात को गाँव के बहुत-से लोग खाना खाने के बाद गप्पे मारने के लिए एक बरगद के पेड़ के नीचे बैठे थे।

बातों - बातों में सुँदर के बारे में चर्चा छिढ़ी। गाँव के कुछ प्रमुखों ने आपस में चर्चा करके तय किया कि उसे किसी पेशे में लगा दिया जाए और हो सके तो उसकी शादी भी कर दी जाए।

दूसरे दिन उससे बताया गया कि उस गाँव के सौ परिवारों के लिए एक-एक घडा पानी तालाब से लाया जाए और उनके घरों में पहुँचाया जाए। इसके लिए जो प्रतिफल मिलेगा, हर रोज़ एक के घर में खाना और उसके रहने के लिए एक छोटे-से मकान का प्रबंध।

उस दिन से सुँदर हर रोज़ सबेरे से लेकर शाम तक गाँववालों के घरों में एक-एक घडे के हिसाब से पानी देता जाने लगा।

कुछ दिनों बाद गाँव के कुछ प्रमुख लोग उसी बरगद के पेड़ के नीचे बठैकर बातें कर रहे थे। उस समय सुँदर भी उनसे थोड़ा हटकर बैठा था और उनकी बातें ग़ौर से सुन रहा था।

वे प्रमुख लोग उस गाँव के शिवालय के बारे में बातें कर रहे थे। एक वृद्ध प्रमुख ने कहा कि उस शिवालय में एक विचित्र विषय है, जो वहाँ खंभे पर खुदा हुआ है। उसमें लिखा हुआ है कि जो, डेढ़ सो घडों के पानी से शिवलिंग का अभिषेक करेगा, वह सम्राट बनेगा।

एक प्रमुख ग्रामीण ने उस खुदे हुए विषय की खिल्ली उड़ायी और कहा कि यह सब बकवास है। उसने कहा कि अगर डेढ़ सौ घडों के पानी से शिवलिंग का अभिषेक करने मात्र से कोई सम्राट बन जायेगा, तो हर कोई यह काम करेगा

(पचीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी)

और सम्राट बन जायेगा।

बाक़ी व्यक्ति भी उसके मत से सहमत हो गये। उन्होंने भी उसका तर्क स्वीकार किया और निर्णय किया कि वृद्ध प्रमुख की बातों में सत्य नहीं है। सुँदर ने उसके वाद-विवाद ध्यान से सुना। रात भर इसी के बारे में वह सोचता रहा। उसे नींद ही नहीं आयी। वह सोचता रहा कि वह पुरातन विषय झूठा कैसे होगा? उसे लगा कि डेढ़ सौ घडों का पानी लाने की शक्ति और क्षमता उनमें नहीं है, इसीलिए उस विषय को वे बकवास और असत्य बता रहे हैं।

वह सोचने लगा "अब मेरा काम है पानी ले आना। डेढ़ सौ घडों के पानी से शिवलिंग का अभिषेक करूँगा। अगर वृद्ध की कही बात सच निकली तो सम्राट बनूँगा। अगर नहीं भी हुआ तो क्या हुआ? कम से कम थोड़ा-बहुत पुण्य तो मिलेगा।"

दूसरे दिन उसने गाँववालों के घरों में पानी देने का काम पूरा करने के बाद शिवलिंग का अभिषेक प्रारंभ कर दिया। वह एक-एक घडा गिनता जाता और शिवलिंग पर पानी बरसाता जाता।

एक सौ चालीस घडों के पानी से अभिषेक करने के बाद सुँदर अपने को अशक्त महसूस करने लगा। उसके पैर लड़खड़ाने लग गये। थकावट से वह खड़ा भी नहीं हो पा रहा था। उसने अपने आप को संभाल लिया और दृढ़ निश्चय कर लिया कि शेष दस घडों का पानी भी ले आऊँगा और शिवलिंग का अभिषेक करूँगा।

किन्तु आठ और घडों का पानी ले आने के बाद वह बिल्कुल ही अशक्त हो गया। वह शिवलिंग को और अपने आप को ध्यान से देखता रहा।

"एक सौ अड़तालीस घडों के पानी से अभिषेक करने के बाद भी सम्राट होने का कोई लक्षण मुझमें दीख नहीं रहा है। गाँव के प्रमुखों का निर्णय अवश्य ही सही होगा। उनके निर्णय के अनुसार ही यह खुदा हुआ विषय असत्य होगा, बकवास होगा। मैं बेवकूफ़ हूँ, इसीलिए मैने यह निरर्थक परिश्रम किया। पर जो भी हो, बाक़ी दो घडों का पानी भी ले आऊँगा और शिवलिंग पर बरसाऊँगा। जिस शिवलिंग ने मेरे परिश्रम को व्यर्थ कर दिया, जिसने मुझे इतना कष्ट दिया, उसे दो टुकड़ों में तोड़ दूँगा। ऐसा करने पर गाँववाले मुझे गाली दें, दंड दें तो दें। मैं इसकी कोई परवाह नहीं करता।" यों बड़बड़ाता हुआ तालाब गया और दो घडे पानी ले आया।

अपने निर्णय के अनुसार क्रोधित होते हुए उसने दोनों घडे अपना पूरा बल देकर शिवलिंग पर दे मारे। दूसरे ही क्षण वह शिवलिंग दो टुकड़ों में बँट गया और उनके बीच में से त्रिशूलधारी शिव प्रत्यक्ष हुए। सुँदर भय से थरथराने लगा।

"ऐ सुँदर, तुम मूर्ख हो, तुम बुद्धिहीन हो। जो करना है, उसे भक्ति और श्रद्धा से संपूर्ण करना और फल की इच्छा रखना बुद्धिमानों का लक्षण है। अपनी मूर्खता और अज्ञान के कारण अपने पैरों पर स्वयं तुमने कुल्हाड़ी मार ली है। हाथों आये सदवकाश को अपनी बुद्धिहीनता के कारण खो बैठे हो। अगर उन दोनों घडों के पानी से श्रद्धा-पूर्वक तुम अभिषेक करते तो अवश्य ही सम्राट बनते। अब यहाँ क्षण भर भी ठहरना नहीं। जाओ, चले जाओ" शिव ने उसे कटु स्वर में आज्ञा दी।

सुँदर सिर झुकाकर बाहर जानेवाला ही था कि उसके देखते-देखते दो टुकड़ों में बँटा। वह शिवलिंग और भगवान शिव अदृश्य हो गये।

पाँडुराजा अपनी पत्नियाँ कुन्ति तथा माद्रि के साथ अरण्यों में आनंद लूटता हुआ विहार कर रहा था। मृगों का आखेट करता हुआ मज़ा लूट रहा था। एक दिन जब हिरन व हिरनी प्रेम कर रहे थे, तब उसने अपने बाण से उन्हें मारा। उनके प्रेम - मिलाप को भंग किया। वे सचमुच हिरन व हिरनी नहीं थे। वे तो किन्दम नामक मुनि और उसकी पत्नी थे। हिरनों के रूप में परिवर्तित होकर वे प्रकृति का आनंद लूट रहे थे। वह मुनि शाप देता हुआ मर गया। उसने शाप दिया "जब तुम अपनी पत्नियों से प्रेम - मिलाप में लिप्त रहोगे, तब तुम्हारी भी ऐसी ही मृत्यु होगी।" पाँडुराजा ने बहुत गिड़गिड़ाया। अनजाने में घटी इस घटना से हुए अपने अपराध को क्षमा करने की प्रार्थना की। प्रश्चात्ताप व्यक्त किया, किन्तु मुनि ने उसकी एक ना मानी। उसने स्पष्ट बताया "मैं शाप को वापस नहीं लूँगा। तुमसे बहुत बड़ा पाप हुआ है। और इस पाप का दंड तुम्हें भुगतना ही होगा। हम दोनों पति-पत्नी प्रकृति की गोद में मूक पशु बनकर प्रेम-क्रिया में लिप्त थे। तुमने हमारे प्रेम में विघ्न डाला और यह पैशाचिक कृत्य है। इस कारण भविष्य में तुम इस प्रेम-मिलाप के भाग्य से वंचित रहोगे। तुम्हारी अपनी संतान भी नहीं होगी। अगर काम-वासना से उत्तेजित होकर मेरे शाप को तुमने भुला देने की चेष्टा की तो तुम्हारी मृत्यु निश्चित है। कोई भी शक्ति तुम्हारी रक्षा नहीं कर पायेगी"।

पाँडव-जनन

उनके इस निर्णय को ना मानने पर वहीं की वहीं देह त्याग करने के लिए भी वे सन्नद्ध हो गयीं।

पाँडुराजा को उनकी बात माननी ही पड़ी। उसने उनके साथ वानप्रस्थ जीवन बिताने का निश्चय किया। तीनों ने अपने मूल्यवान वस्त्र तथा आभूषणों को त्यज दिया। वल्कल पहने। उनके साथ आयी हुई परिचारिकाएँ हस्तिनापुर भेज दी गयीं। वे किसी एक निश्चित स्थल पर ना ठहरकर विभिन्न स्थलों में घूमते रहे। नागशत पर्वत, चैत्ररथ, कालकूट, हिमवंत, गंधमाधन, इंद्रधुम्यहृद, हंसकूट गये और हर स्थल पर कुछ दिन रहे। आख़िर वे शतश्रृँगपर्वत पर पहुँचे। वहाँ अनेकों मुनि उपस्थित थे। पाँडुराजा भी उनके साथ - साथ कठोर तपस्या में मग्न हो गया।
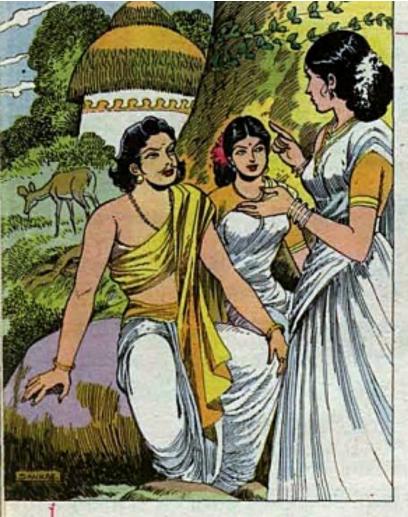
पाँडुराजा को उन दोनों की मृत्यु पर बहुत ही दुख हुआ। अब तक उसकी कोई संतान भी नहीं थी। भविष्य में भी मुनि के शाप के कारण संतान के होने की कोई संभावना भी नहीं है। अतः उसने पत्नियों से कहा "अब मेरे लिए सन्यास ही एक मार्ग है। मैं इन्ही जंगलों में अपना शेष जीवन बिताऊँगा। तुम दोनों हस्तिनापुर लौटो और यह समाचार भीष्म, विदुर, धृतराष्ट आदि को दो।"

"हम आपकी धर्मपत्नियाँ हैं। आपको छोड़कर कैसे लौट सकती हैं? हम जाकर भी कहाँ और कैसे रह पायेंगी? सब मिलकर तपस्या करेंगे और उसके सुफल के बल पर पुण्यलोक सिंधारेंगे।" कुन्ति और माद्रि ने कहा।

किन्तु अब उसमें एक संदेह उत्पन्न हुआ। जिनके पुत्र नहीं होते, वे चाहे कितनी भी घोर तपस्या करें, पुण्यलोक जाना उनके भाग्य में नहीं होता। उसे तो संतान की प्राप्ति का भाग्य नहीं। उसने सोचा कि मेरे समान के या मुझसे उत्तम पुरुष मेरी पत्नियों को पुत्र-जन्म का सौभाग्य दें, तो वे पुत्र क्षेत्रज होंगे। स्वयं भी क्षेत्रज ही तो हूँ। यों सोचकर उसने अपने विचार कुन्ति से व्यक्त किये। अन्यों से पुत्र - प्राप्ति के लिए कुन्ति ने पहले अस्वीकार कर दिया। किन्तु पाँडुराजा ने कारण तथा आवश्यकता जताकर उसे मना लिया।

कुन्ति ने अपने पति से कहा "मेरे बचपन में दुर्वास महामुनि ने एक मंत्र का उपदेश दिया

था। उसका जप करने से कोई भी देवता प्रत्यक्ष होकर वर प्रसादेगा। आप ही बोलिये कि अब मैं किस देवता का स्मरण करूँ ?''

''यह तो बहुत अच्छा हुआ। कौरववंश का जो राजा होगा, उसका धर्मज्ञ होना नितांत आवश्यक व अनिवार्य है। उसका धर्म-बद्ध होकर शासन चलाना अवश्यंभावी है। अतः तुम धर्मदेवता का ही स्मरण करो।'' पाँडुराजा ने आनंदपूर्वक कहा।

कुन्ति ने मंत्र-पठन किया। यमराज प्रत्यत्र हुआ। उसकी कृपा से वह गर्भवती बनी।

गाँधारी यद्यपि एक साल पहले से ही गर्भवती थी, परंतु कुन्ति की माँ बनने के बाद भी वह माँ बन नहीं पायी। कुन्ति का पुत्र हुआ। उसका नाम रखा गया युधिष्ठर।

उसके पति पाँडुराजा ने चाहा कि उनका एक बलशाली पुत्र भी हो। वायुदेव के स्मरण से कुन्ति कोएक और पुत्र हुआ, जो भीमसेन के नाम से प्रसिद्ध हुआ। भीमसेन जब माँ की गोद में था, तब एक विचित्र घटना घटी। कहीं से उस प्रदेश में एक बाघ आया। कुन्ति उसे देखकर भयभीत हो गयी। वह भूल ही गयी कि उसकी गोद में उसका पुत्र है, भय के मारे वह उठ खड़ी हो गयी। उसके अकस्मात् खड़े होने से भीमसेन फिसल गया और एक पत्थर पर जा गिरा। तक्षण ही वह पथ्थर चार भागों में टूट गया। यह देखकर वहाँ उपस्थित सब लोगों ने दाँतों तले उँगलियाँ दबायीं। इस घटना के उपरांत ही मुनियों ने भीमसेन कहकर उसका नामकरण किया।

पाँडुराजा की इच्छा हुई कि एक असाधारण
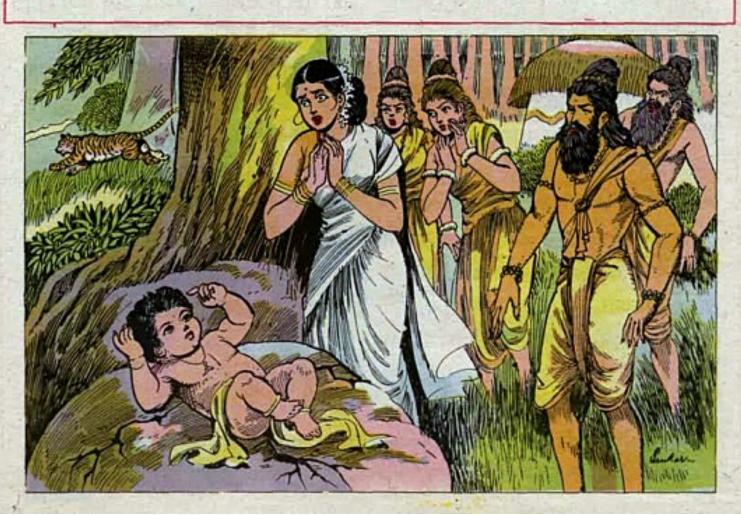
पुत्र प्राप्त करूँ। उसकी इच्छा की पूर्ति के लिए कुन्ति ने इंद्र से वर पाकर अर्जुन को जन्म दिया।

हस्तिनापुर में गाँधारी ने सौ पुत्रों को जन्म दिया तो शतश्रृंग में कुन्ति ने तीन पुत्रों को जन्म दिया। पाँडुराजा चाहता था कि कुन्ति और पुत्रों को जन्म दे। किन्तु कुन्ति ने उसके इस प्रस्ताव को अस्वीकृत किया।

माद्रि ने पाँडुराजा से कहा "कुन्ति ने मंत्रों के प्रभाव से तीन पुत्रों को जन्म दिया है। मैं भी समान अधिकार रखती हूँ। मैं भी क्यों माँ नहीं बन सकती? कुन्ति उस मंत्र का उपदेश मुझे भी दे तो मैं भी माँ बन सकती हूँ।"

पाँडुराजा ने कुन्ति को माद्रि की इच्छा बतायी। कुन्ति ने माद्रि को उस मंत्र का उपदेश दिया।

माद्रि ने अश्विनी देवताओं की आराधना की और उनके द्वारा नकुल, सहदेव को जन्म दिया। माद्रि मंत्र-प्रभाव से और संतान प्राप्त करती, किन्तु कुन्ति ने उसे द्वितीय बार मंत्र - उपदेश देने से अस्वीकार कर दिया। वह माद्रि पर क्रोधित हो गयी, क्योंकि उसने एकदम दो-दो देवताओं का स्मरण किया था।

एक-एक वर्ष के बाद जन्मे पुत्रों को देखकर पाँडुराजा बहुत ही प्रसन्न हुआ। उनकी देख-भाल में अपना समय व्यतीत करने लगा। सब आश्रमवासियों ने उन शिशुओं की परवरिश में पर्याप्त श्रद्धा व उत्सुकता दिखायी। वसुदेव ने अपने पुरोहित कश्यप के द्वारा अपने पोतों के लिए सोने के आभूषण, रेशमी वस्त्र तथा सुँदर गुड़िये भेजे।

पाँडुराजा ने वहाँ के पंडितों द्वारा अपने पुत्रों को वेदों की शिक्षा दिलवायी।

यों समय गुज़रता गया। वसंतऋतु में एक दिन जब कुन्ति ब्राह्मणों की पूजा में मग्न थी, तब पाँडुराजा माद्रि के पास गया। उसको अकेले देखकर काम वासना से उत्तेजित होकर उसे अपने आलिंगन में लिया। तब किन्दम के शाप के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।

अपने पति के शव पर गिरकर माद्रि विलाप करने लगी। कुन्ति तथा अन्य मुनिगणों ने यह विलाप सुना और दौड़े-दौड़े आये। जो हुआ, उसपर उन्हें दुख हुआ और आश्चर्य भी। माद्रि ने

कुन्ति को अपने पास बुलाया और उसे अपने पति की मृत्यु का कारण बताया।

"माद्रि, तुमने यह क्या कर दिया। मुझे मुनि के शाप का सदा स्मरण रहता है, इसीलिए आज तक उन्हें बड़ी सावधानी से संभालती रही, सावधानी बरतती रही। ऐसा तुमने क्यों होने दिया ? अब कर भी क्या सकते हैं। चूंकि मैं बड़ी पत्नी हूँ, अतः उनके साथ मैं भी सती हो जाऊँगी। बच्चों की देख-भाल तुम सावधानी से करते रहना"। कुन्ति ने माद्रि से कहा।

माद्रि रोती हुई बोली "मैने उन्हें वश में रखना चाहा, रोका, मना किया, पर असफल रही। पति के प्राणों की रक्षा ना कर पानेवाली अभागिन हूँमैं, पापिन हूँ। मुझमें बच्चों को पालने का सामर्थ्य नही। जब पति को ही बचा नहीं सकी, इन्हें कैसे पाल पाऊँगी। इहलोक में पति को सुखी रख नहीं सकी, शायद परलोक में उन्हें सुखी रख पाऊँ, इसीलिए मैं ही सती हो जाऊँगी।" कहकर कुन्ति से उसने अनुमति ली और पति की चिता के साथ-साथ वह भी जल गयी।

शतश्रृंग के मुनिगण कुन्ति और पाँडवों को लेकर हस्तिनापुर पहुँचे। उन्होने भीष्म, धृतराष्ट आदि प्रमुखों को संपूर्ण वृत्तांत बताया।

पाँडु राजा की मृत्यु पर भीष्म तथा धृतराष्ट को बहुत दुख हुआ। उन्होंने विदुर से कहा कि उनका यथावत् क्रिया-कर्म करावें।

माद्रि और पाँडुराजाओं का चिता-भस्म एक पालकी में रखा गया और संपूर्ण मर्यादाओं के साथ उन्हें गंगा जल में निमज्जित किया गया। असंख्य जनों ने इसमें भाग लिया। बारह दिनों
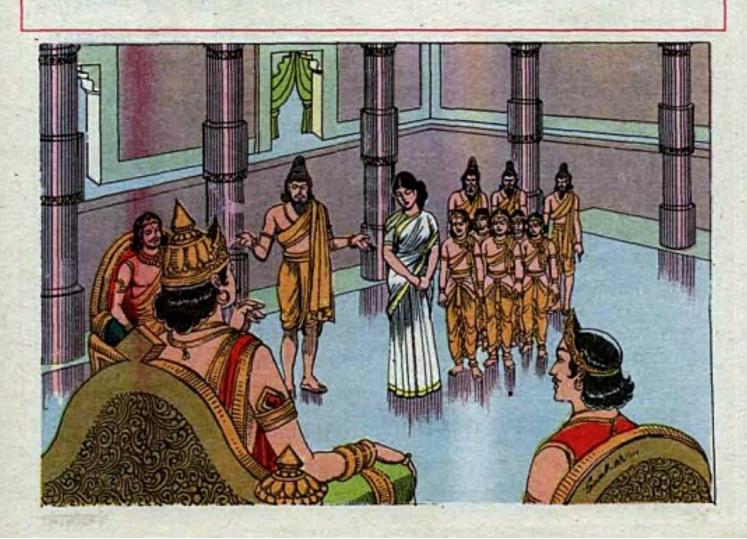
तक ये अंत्यक्रियाएँ चलती रहीं, तब जाकर वे नगर वापस लौटे।

व्यास हस्तिनापुर आये हुए थे। उनके परामर्श के अनुसार सत्यवति अपनी वधु अंबिका और अंबालिका को लेकर तपस्या करने अरण्यों में चली गयी। तीनों वहीं तपस्या करती हुई मृत्युलोक सिधारीं।

उस समय से पाँडव और कौरव धृतराष्ट्र के यहाँ ही पलने लगे। सब मिल-जुलकर खेलते रहते थे। आपस में स्पर्धाएँ भी होती थीं। सब स्पर्धाओं में भीम ही प्रथम आता था, उसीकी विजय होती थी। वह अपना बल-प्रदर्शन करने दस लोगों को एक साथ ढ़ोता हुआ तेज़ी से भागता था। जब आपे से बाहर हो जाता तो दूसरों के केश पकड़ लेता और उन्हें छोड़ने का नाम ही नहीं लेता था। तैरते समय दस-दस लोगों को एक साथ पानी में दबाये रखता था। किशोर जब फलों के लिए पेड़ पर चढ़ते थे तब वह पेड़ को ज़ोर से हिलाता और कभी-कभी जड़ों सहित पेड़ को उखाड़ देता था। किशोर तो उससे थर-थर काँपते थे। ऐसा करने में भीप ट । कोई दुरुद्देश्य नहीं था। किन्तु उसका खिलवाड़ दूसरों के प्राणों को संकट में डाल देता था।

भीम की इस अपार शक्ति को देखकर दुर्योधन ईर्ष्या से जल उठता था। उसे लगा कि भीम मर जाए तो बाकी सब उसकी बातें मानेंगे और उसका कहा करेंगे। युधिष्ठर शांत स्वभाव का था। अर्जुन अपने अग्रज से अनुमति लिये बिना कभी भी कोई कार्य करता नहीं था। नकुल और सहदेव इतने शक्तिवान नहीं थे कि वे उसका कुछ बिगाड़ सकें। वे चारों कौरवों से कभी झगड़ते भी नहीं थे। लेकिन भीम की बात ही कुछ और थी। वह जब कभी भी देखता कि उसके और अपने भाइयों के साथ अन्याय हो रहा है तो वह डटकर उनका विरोध करता था और अपने अधिकारों को प्राप्त करके ही छोड़ता था। कभी कौरव अपनी हद से बढ़ जाते, अपनी सीमाओं को पार करके पाँडवों के साथ दुर्व्यवहार करते तो भीम वहीं का वहीं उन्हें दंड देता। उसका मुक़ाबला करने की ताक़त भी उनमें नहीं थी। इसलिए भयभीत होकर चुप्पी साध लेते थे।

दुर्योधन के सम्मुख अब एक ही मार्ग था और
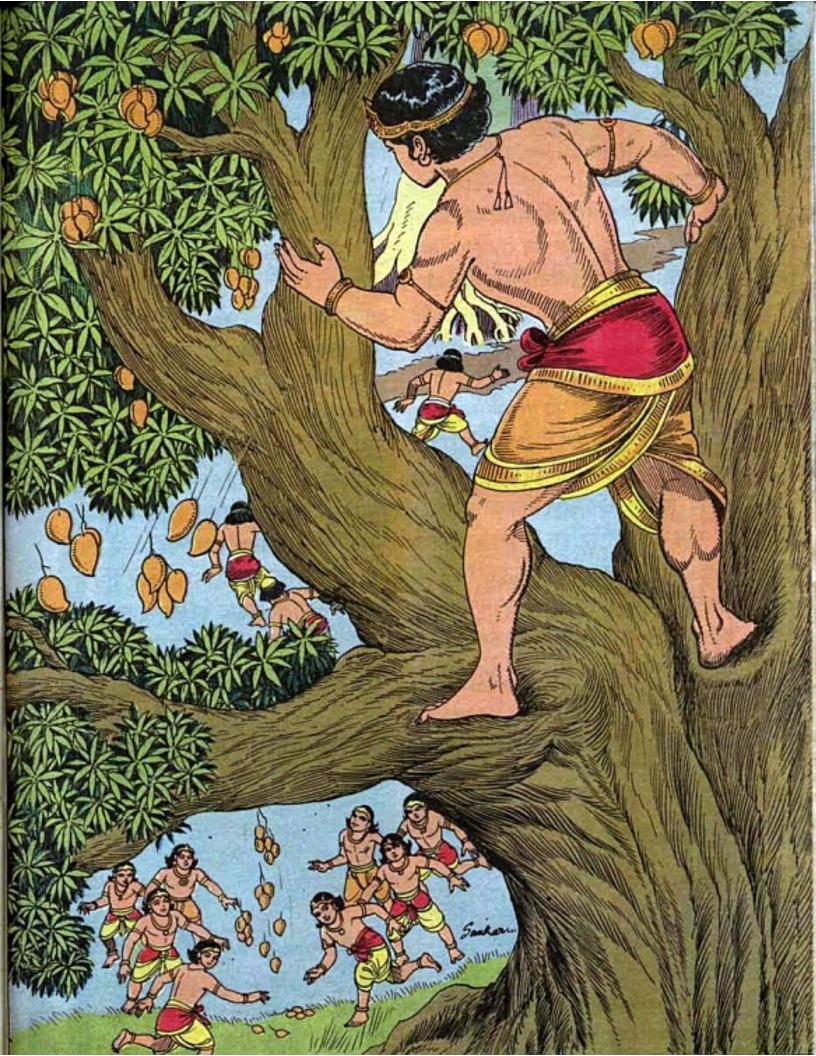
वह था भीम की मृत्यु। वह ऐसे अवसर की प्रतीक्षा में था। गंगा नदी तट पर प्रमाणकोटि स्थल नामक एक स्थल है। वहाँ जलक्रीडाओं के लिए सरोवर है, जिसके चारों ओर सीढ़ियाँ भी हैं। वहाँ उद्यानवन और सुंदर भवन भी हैं। दुर्योधन ने ये सब अपनी सुविधाओं के लिए बनवाये थे। एक दिन निर्णय हुआ कि सब राजकुमार वहाँ विहार के लिए जाएँगे। नाना प्रकार के रुचिकर पदार्थ बनवाये गये। सेवक उन्हें प्रमाणकोटि स्थल लेकर पहुँचे।

कौरवों के साथ-साथ पाँडव भी वहाँ आये। लाये गये खाद्य पदार्थों को पाँडवों ने बाँटकर खाया। परंतु दुर्योधन भीम के ही पास बैठा रहा। उससे प्यार से बातें करता रहा। बातों - बातों में विष-मिश्रित खाना उसने भीम को खिलाया।

भीम के मन में दुर्योधन के प्रति कोई शंका ही नहीं थी। उसने पेट भर खाया, दूसरों के साथ जल-क्रीडाएँ कीं। अब विष अपना काम करने लगा। पेट में गड़बड़ी होने लगी। गंगा तट की शीतल वायु का आनंद लूटते हूए वह सो गया और बेसुध हो गया।

दुर्योधन को इस बात पर खुशी हुई कि उसकी चाल सफल हो गयी। उसने भीम के हाथ-पाँव बाँध दिये और गंगा की गहराई में उसे फेंक दिया। भीम तो कुछ भी जानता नहीं था। वह सीधे पाताललोक में पहुँचा।

वहाँ विषैले सर्पों ने उसे डसा। उनके विष से दुर्योधन का खिलाया हुआ विष उतर गया और भीम होश में आया। उसे मालूम हो गया कि उसके हाथ-पाँव बंधे हुए हैं। उसने एक झटका दिया, जिससे सारे बंधन टूट गये। अब उन सर्पों को मारने लगा, जिन्होंने उसे डसा था।

यह बात वासुकि को मालूम हुई। वासुकि आया औरभीम को देखकर जान गया कि वह उसका बंधु ही है। क्योंकि कुन्ति का पिता शूर वासुकि की बहन का लड़का है। उसे देखकर वासुकि बहुत ही प्रसन्न हुआ। वह उसे ले गया और ऐसा अनोखा रस पिलाया, जिसे पीने से हज़ार हाथियों के समान का बल प्राप्त होता है। भीम ने आठ मटकों का रस पिया और आराम से सो गया।

- सशेष

मिथ्याभिमान
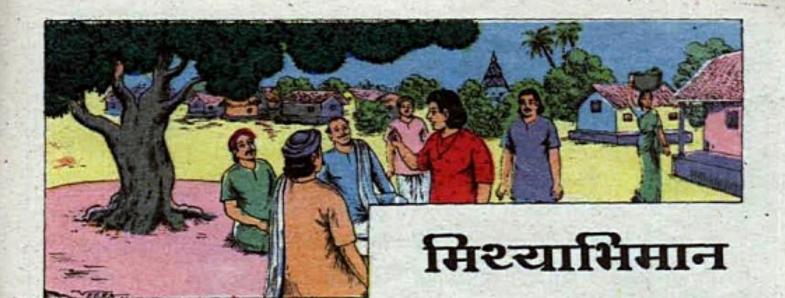
लोकनाथ एक संपन्न किसान का एकमात्र पुत्र था। बचपन से ही उसे बड़े लाड - प्यार से पाला गया, इसलिए वह बहुत ही घमंडी और झगडालू बना। उसे अपनी अक़्लमंदी पर बहुत ही गर्व था, अतः वह दूसरों का मज़ाक उड़ाता और आनंद लूटता था। शहर में उच्च शिक्षा समाप्त करके गाँव लौटा।

वह मन ही मन सोचता कि इतनी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद उसे एक गाँव में रहना पड़ रहा है। उसे इस बात का दुख भी होता था। उसका दावा था कि तर्क - शास्त्र में तथा भाषा - ज्ञान में उसकी बराबरी का इस गाँव में कोई ही नहीं, बल्कि पड़ोस के गाँवों में भी कोई है ही नहीं। गाँव में एक छोटी-सी भी घटना घटी तो वह अनावश्यक ही उसमें दख़ल देता था। अपने तर्क के बल पर बात को बढ़ाता था, जिससे गाँव के लोग उससे ऊब गये। उससे उन्हें चिढ़ हो गयी।

एक बार लोकनाथ गाँव से थोड़ा हटकर जो तालाब था, उसके किनारे बैठकर अपने दोस्तों से बेकार बातों में लगा हुआ था। उस समय गुरुनाथ नामक एक किसान वहाँ से गुज़र रहा था। लोकनाथ ने उसकी खिल्ली उड़ानी चाही। उसे बुलाया और पूछा ''गुरुनाथ, समझ लो, एक बड़ा पथ्थर हमने तालाब में फेंक दिया। वह तो डूबेगा ही। क्या बता सकते हो डूब जाने का क्या कारण हो सकता है ?''

उसके इस सवाल पुर गुरुनाथ हँस पड़ा और बोला ''बड़ा पथ्थर क्यों, छोटा - सा भी पथ्थर फेंकें तो वह भी डूब जायेगा। उसे तैरना जो नहीं आता। उसके डूबने का यही कारण है।''

उसके इस उत्तर से लोकनाथ ही नहीं बल्कि उसके दोस्त भी ठठाकर हँस पड़े। लोकनाथ ने गुरुनाथ से कहा ''तुमने जो कहा, एकदम ग़लत है। भूमि में आकर्षण - शक्ति है, इसीलिए पथ्थर अपने वजन की वजह से डूब जाता है''।

श्री रमणलाल

गुरुनाथ नाराज़ होता हुआ बोला "मेरी समझ में नहीं आता कि मेरे उत्तर पर आप लोग क्यों यों ठठाकर हँस पड़े ? क्या मैं तुम्हीं से कहलाऊँ कि मैंने जो कहा, सही था ?"

लोकनाथ ने उसकी चुनौती स्वीकार करते हुए कहा "कहलाइये तो सही"।

गुरुनाथ ने अपने हाथ फैलाये और उन्हें दिखाते हुए कहा "इतनी लंबी मछली जब पानी में फेंकी जाए तो वह क्यों नहीं डूबती ?"

"भला वह क्यों डूबेगी ? वह तो मछली है। उसमें जान होती है" लोकनाथ ने लापरवाही से कहा।

"जान के होने से क्या हुआ ? वह तो वज़नदार है ना ?" गुरुनाथ ने कहा।

"वज़न से क्या होता है ? वह तो तैरना जानती है, इसलिए वह डूबती नहीं" लोकनाथ ने बताया। परंतु तुरंत ही उसने अपनी जीभ काट ली। वह समझ गया कि मैंने ग़लत बता दिया। गुरुनाथ ने खुश होते हुए कहा "तब तो मेरा जवाब बिल्कुल सही है। मैंने कहा था कि तैरना नहीं आता, इसलिए पथ्थर डूब गया। अब बोलो, मेरा जवाब सही है या नहीं ?"

लोकनाथ ने अपनी ग़लती को छिपाने के उद्देश्य से कहा "हो सकता है। किन्तु क्यों और कैसे होता है, इसे जानने का भी एक शास्त्र है। असल में हर एक क्रिया के पीछे एक शास्त्र है। इन शास्त्रों को जानने के लिए थोड़ा - सा ही सही तत्संबंधी पांडित्य का होना आवश्यक है।"

गुरुनाथ ने उसकी बड़ी - बड़ी बातों की कोई परवाह ही नहीं की और वह हँसता हुआ बोला "तुम घुमा - फिराकर बातें करते हो। तुम जैसे लोगों के लिए पांडित्य की आवश्यकता पड़ती होगी। पर मुझ जैसे साधारण किसान के लिए ऐसे पांडित्य की कोई आवश्यकता नहीं है। सबेरे - से लेकर शाम तक मेहनत करनेवाले मुझ जैसे आदमी के लिए थोड़ा - सा व्यावहारिक ज्ञान काफ़ी पड़ता है।"

किसान के जवाब से लोकनाथ का चेहरा फीका पड़ गया। अपनी इस हार के बाद उसका घमंड चूर - चूर हो गया। अब वह सबसे विनय से पेश आने लगा और गाँव में ही रहकर खेत के कामों में अपने पिता की मदद करने लगा।
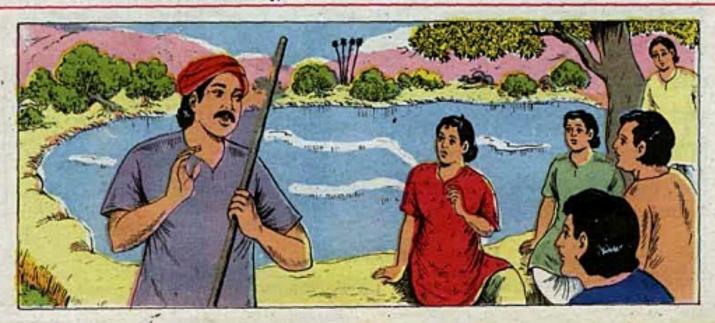
युवक राघव अच्छे स्वभाव का है। नादान है। बचपन में ही उसकी माँ गुज़र गयी। पिता ने उसे बड़े लाड़ - प्यार से पाला पोसा। इस भय से उसने दूसरी शादी भी नहीं की कि शायद सौतेली माँ बेटे को सताये।

बचपन से ही राघव दूसरों की मदद करता रहता था। लोग जो भी कहें, उसका विश्वास करता था। उसकी इस कमज़ोरी का फ़ायदा उठाकर बहुत से लोगों ने उसे धोखा दिया। वह मानता ही नहीं था कि आदमियों में धोखेबाज़ भी हो सकते हैं।

एक दिन राघव के घर एक बैरागी आया। राघव को तो देखते ही उसने उसकी भरपूर प्रशंसा की। बैरागी ने देखा कि अपने बेटे की प्रशंसा से असंतृप्त उसके पिता का चेहरा मुरझा गया। उसके हाव-भाव को देखकर बैरागी को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने राघव को बाहर भेज दिया और उसके पिता से पूछा ''तुम्हारा बेटा तो बहुत ही गुणवान है। मैं तो उसकी सूरत देखकर ही समझ गया कि वह उत्तम और गुणी युवक है। इसीलिए मैने उसकी प्रशंसा की। तुम्हें तो इसपर गर्व होना था, प्रसन्न होना था, परंतु तुम उदास दिख रहे थे। ऐसा क्यों ?''

''महोदय, वह तो अवश्य ही सद्गुणी है। इसी कारण से उसी को नष्ट पहुँच रहा है। सब उसे धोखा दे रहे हैं। जब तक मैं ज़िन्दा हूँ, संभाल लूँगा, चिन्ता की कोई बात नहीं। मैं तो हर दिन उसे समझाता रहता हूँ कि इन निरर्थक, नष्टदायक और हानिकारक गुणों से दूर रहो। मुझे भी आशा थी कि किसी दिन मेरी बातों को समझेगा और अपने को सुधारेगा। लेकिन आपकी बातें सुनने के बाद मेरी वह आशा भी सफल होती नहीं दीखती। आप जैसे उत्तम व्यक्ति ने उसकी प्रशंसा की, उसके सद्गुणों की सराहना की तो अपने कार्यों के प्रति उसका विश्वास और दृढ़ होगा। मेरी बातों की वह

भवानी प्रसाद

हुआ, परंतु बेटे से दूर रहने की चिंता ने उसके मन को अशांत कर दिया। वह सोचने लगा कि मैं तो वृद्ध हो गया हूँ, दो साल भी ज़िन्दा रह पाऊँगा या नहीं। आख़िरी क्षणों में उसे देखे बिना रह पाना कैसे संभव है ?

बैरागी थोड़ी देर सोचता रहा और फिर बोला "आजकल मैं तीर्थों की यात्रा करते हुए देश भर भ्रमण कर रहा हूँ। जब मैं अपनी तीर्थयात्राएँ समाप्त करूँगा, तब कुसुमपुर के कुसुमा नदी के तट पर स्थित आश्रम में मैं निवास करूँगा। तब अपने पुत्र को वहाँ भेजना"।

इसके बाद उसने राघव को बुलाया और कहा "अच्छाई सफ़ेद रंग के समान है। बुराई काला रंग जैसा है। सफ़ेद और काला रंग घुल - मिल जाएँ तो सफ़ेदी काली हो सकती है, पर काली सफ़ेद नहीं हो सकती। तुम अच्छे हो और अच्छाई ही का साथ दो। बुराई का साथ दोगे, आँख मूँदकर उसका विश्वास करोगे तो तुम्हारी अच्छाई पर कलंक लग जायेगा। तुम्हारे सद्‌गुण, दुर्गुण में बदल जाएँगे।"

राघव ने विनयपूर्वक कहा "बुराई से मैं अवश्य ही दूर रहूँगा, परंतु मैं कैसे जानूँ कि यह बुराई है ?"

बैरागी ने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा "आज से बुराई ही तुमसे दूर भागेगी। तुम्हें कोई भी धोखा दे नहीं पायेगा। मेरा यह आशीर्वाद दो वर्षों तक काम करेगा। इसके बाद मेरे पास आना। तब तुम्हें सिखाऊँगा कि बुराई की

परवाह ही नहीं करेगा। यही कारण है कि आपकी प्रशंसा सुनकर भी मैं प्रसन्न नहीं हो पाया।"

बैरागी ने दुखी राघव के पिता को सांत्वना दी और कहा "तुम्हारे पुत्र जैसे सुपुत्र इस संसार में बहुत ही कम होते हैं। वे अवश्य ही भविष्य में दूसरों के लिए आदर्श प्रमाणित होंगे। ऐसे युवकों में परिवर्तन लाने की चेष्टा त्रुटिपूर्ण है। परंतु एक बात अवश्य है, उसमें लोकज्ञान की कमी है। उसे मैं अपने साथ ले जाऊँगा और दो वर्षों तक उसे आवश्यक शिक्षा दूँगा। इसके उपरांत तुम्हें चिंतित होने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।"

पिता बैरागी की बातों से प्रसन्न तो अवश्य

पहचान कैसे की जा सकती है''।

इसके बाद तो विचित्र ही हो गया। कोई भी मित्र उसके पास आता तक नहीं था। राघव को इसपर बहुत दुख हुआ तो उसके पिता ने उसे समझाया ''आगे से कोई भी बुरा आदमी तुम्हारे पास नहीं आयेगा। यह सब बैराघी की महिमा है''।

दो साल गुज़र गये। राघव का पिता मरणावस्था में था। उसने बेटे से कहा ''बेटे, मैं अब और ज़िन्दा नहीं रहूँगा। अपना घर और खेत बेचोगे तो तीस हज़ार अशर्फियाँ मिलेंगीं। मेरे मरने के बाद जो यह दाम देंगे, उन्हें बेच देना। धन लेकर कुसुमपुर चले जाना। वहाँ बैरागी बतायेंगे कि तुम्हें क्या करना चाहिये। बैरागी की बतायी हुई दो सालों की मियाद भी पूरी होनेवाली हैं। स्मरण रहे कि इस अवधि तक तुम किसी का विश्वास ना करना।''

इसके एक हफ़्ते के बाद राघव के पिता का देहांत हो गया। जो उसे सांत्वना देने आये, उनसे राघव ने अपने पिता की बतायी बातें बतायीं।एक संपन्न किसान ने उसका घर और खेत खरीदा और उसे पूरी रक़म दे दी।

यह जानकर गणपति नामक उसका दोस्त उससे मिलने आया और बोला ''राघव, इतनी बड़ी रक़म लेकर अकेले जाना अच्छा नहीं है। रास्ते में चोर होंगे, धोखेबाज़ होंगे। तुम्हें चकमा देकर पूरी रक़म हड़प भी सकते हैं। इसलिये मेरा एक सुझाव है। हमारे गाँव के साहुकार के पास एक हीरा है, जिसका मूल्य तीस हज़ार अशर्फ़ियाँ
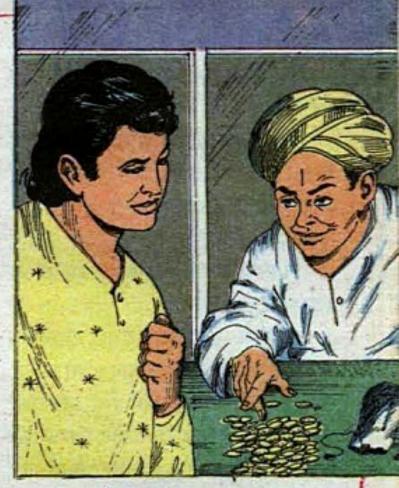
हैं। यह रक़म देकर वह हीरा खरीद लो। हीरे को सबकी आँखों से बचाकर कपड़ों में छिपा लेना सुलभ है।''

यह सच है कि साहुकार शरभ के पास इतना क़ीमती हीरा है। उसने ही राघव से यह रक़म ऐंठने के लिए गणपति को उसके पास भेजा था। गणपति से जब साहुकार अपना यह चाल बता रहा था, तब उसकी बेटी सुशीला ने सब सुन लिया। वह राघव को चाहती थी। उससे शादी करने की उसकी इच्छा भी थी। पर वह जानती थी कि पिता अवश्य ही इस प्रस्ताव से सहमत नहीं होंगे।

राघव ने गणपति की बातों का विश्वास किया और रक़म लेकर शरभ के यहाँ गया।

शरभ ने तीस हज़ार अशर्फ़ियाँ लीं और उन्हें अपनी बेटी को देकर कहा कि यह रक़म तिजोरी में रखो।

सुशीला ने उन अशर्फियों को तिजोरी में रख दिया। फिर तिजोरी में ही रखे हुए तीस सिक्के लिये। एक-एक सिक्का एक हज़ार अशर्फियों के मूल्य का था। उन तीसों सिक्कों को एक थैली में डाल दिया और उसमें राघव के नाम एक पत्र भी रखा।

उस पत्र में उसने लिखा "मैं तुम्हें चाहती हूँ। बैरागी के यहाँ से लौटने के बाद मुझसे विवाह करो। मेरा बाप तुम्हें नक़ली हीरा देकर तुम्हें धोखा दे दे रहा है। वह नक़ली हीरा एक अशर्फ़ी के मूल्य का भी नहीं है। इसलिए मैं तुम्हारी रक़म तुम्हें दे रही हूँ"।

इस बीच साहुकार ने अपनी पत्नी को बुलाकर कहा "राघव को मैंने अपना हीरा बेच दिया। ऐसे तो उसका दाम चालीस हज़ार अशर्फियों के लगभग है, पर दस हज़ार कम करके बेच दिया। आख़िर राघव कोई पराया तो नहीं, हमारा ही तो है। इसलिए कम करके उसे बेचकर मैंने अपना प्यार और धर्म निभाया; पेटी में रखा हुआ वह हीरा लाकर इसे दे दो।"

वह अपने पति के स्वभाव से भली - भाँति परिचित थी। अतः नक़ली हीरे के बदले उसने असली हीरा ही लाकर राघव को दिया।

सुशीला भी सिक्कों से भरी थैली राघव को देती हुई बोली "रास्ते में भूख लगे तो इस थैली को खोलना। इसमें खाने की चीज़ें हैं। इन्हें खाकर अपनी भूख मिटाना"।
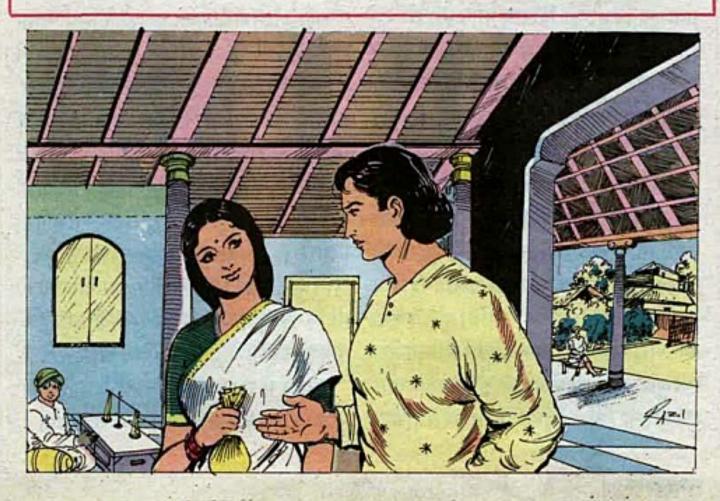
राघव घर लौटा और सुशीला की दी हुई थैली खोली। वह जानने को उत्सुक था कि थैली में क्या है ? सुशीला का पत्र और सिक्कों को देखने के बाद उसकी समझ में आ गया कि साहुकार ने कितना बड़ा धोखा दिया।

राघव ने एक संदूकची में आवश्यक सामान रखा और निकल पड़ा। रास्ते में एक मुसाफ़िर उससे मिला। राघव एक सहयात्री से मिलकर प्रसन्न हुआ। वह जान नहीं पाया कि वह सहयात्री धोखेबाज़ है। इसलिए बातों - बातों में उसने उससे अपनी सारी कहानी बतायी।

थोड़ी दूर जाने के बाद एक पेड़ के नीचे दोनों ने आराम किया। तब सहयात्री ने राघव से कहा ''मुझे नींद आ रही है। मेरी इस थैली में मूल्यवान अशर्फ़ियाँ हैं। इनकी क़ीमत दो लाख है। इसे अपने पास रखो और इनकी रक्षा करते रहना। मैं जब जाग जाऊँगा, तब मैं तुम्हारी पेटी की रक्षा करूँगा। तुम तब सो जाना।''

राघव ने 'हाँ' कह दिया। मुसाफ़िर थोड़ी देर सोता रहा। उसके जाग जाने के बाद राघव सो गया। जागने के बाद उसने देखा कि वह मुसाफ़िर वहाँ नहीं है। अपनी संदूकची भी नहीं है। राघव जान गया कि उसे धोखा दिया गया है और अपना सब कुछ खो दिया है।

दुख तो उसे अवश्य हुआ, पर उसने अपना धैर्य नहीं खोया। वह कुसुमपुर की ओर चल पड़ा।

राघव की संदूकची को लेकर मुसाफ़िर थोड़ी दूर गया और उसने उसे बड़ी आतुरता से उसे

घोषणा भी की थी कि जो नागमणि ले आये, उसे आधा राज्य भेंट में दिया जायेगा।

"सँपेरे ने मुसाफ़िर से कहा "दो दिन लगातार पूजाएँ करनी होंगीं। यहीं किसी सराय में तुम ठहर जाओ। मैं घर जाकर पूजाएँ पूरी करूँगा"।

इस अवधि में उसने हू बहू ऐसी ही एक संदूकची बनवायी। उसमें मृत एक सर्प को और काँच की एक मणि को उसमें रख दिया। वह संदूकची मुसाफ़िर को देते हुए उसने कहा "मेरी पूजाओं के फलस्वरूप इसके अंदर का सर्प मर जायेगा और उसमें नागमणि होगा। नागदेवता की आज्ञा है कि मैं इस संदूकची को ना खोलूँ। मुझे केवल दस अशर्फ़ियाँ दो और इसे ले जाओ।

खोली। वह एकदम चौंक पड़ा। उसमें सिकुड़कर बैठा हुआ एक काला साँप था। उसके सर पर चमकता हुआ एक मणि था। साँप की फुफकार से भयभीत हो मुसाफ़िर ने संदूकची तुरंत बंद कर दी।

साँप को देखकर मुसाफ़िर डर से काँप उठा परंतु वह उसे छोड़कर भी तो नहीं जा सकता। क्योंकि उस नागमणि का मूल्य लाखों का होगा। इसलिए मुसाफ़िर उस संदूकची को एक सँपेरे के पास ले गया।

सँपेरा मुसाफ़िर की बातें सुनकर खुशी से फूले ना समाया। उस देश के राजा का बेटा बीमार था। वैद्यों ने कहा कि नागमणि का स्पर्श कराने पर राजकुमार चंगा हो जायेगा। राजा ने

मुसाफ़िर ने उसे दस अशर्फ़ियाँ दीं। उसने सराय में जाकर संदूकची खोली और तृप्त होकर वहाँ से चला गया। उसे क्या मालूम था कि उसके साथ धोखा हुआ है।

अब सँपेरे ने असली संदूकची खोली। उसमें ना ही सर्प था, ना ही मणि। उनकी जगह पर कुछ तालपत्र थे। वह बेचारा हाय - हाय करता रहा। उसने सोचा कि उसके साथ भी धोखा हुआ है। फिर भी उसको लगा कि इन तालपत्रों में अवश्य ही कुछ लिखा हुआ होगा। उन्हें लेकर पंडित के पास गया, क्योंकि वह अनपढ़ था।

पंडित ने तालपत्रों के श्लोकों को विशद रूप से पढ़ा। उसने जान लिया कि वह अद्‌भुत काव्य है। पंडित ने सोचा कि अगर ये तालपत्र राजा

को दिये जाएँ तो राजा उसे लाखों अशर्फ़ियाँ देंगे। उसने असलियत सँपेरे से छिपायी और उससे कहा "किसी मूर्ख ने अर्थहीन बातें इसमें लिखी हैं। इनका कोई मूल्य ही नहीं। किन्तु यह संदूकची मुझे बहुत अच्छी लगी है। मैं इसे रख लूँगा। इसके लिए मैं तुम्हें पचास अशर्फ़ियाँ दूँगा"।

सँपेरे ने पंडित की बात सहर्ष स्वीकार कर ली। उसने संदूकची और तालपत्र उसे दे दिया और अशर्फ़ियाँ लेकर वहाँ से चला गया। पंडित तक्षण ही राजधानी निकल पड़ा राजा के दर्शनार्थ। राजधानी पहुँचकर वहाँ के एक सराय में ठहरा।

उस दिन रात को एक चोर पडित के कमरे में घुस आया। पंड़ित घोड़े बेचकर सो रहा था। चोर ने उस संदूकची को खोल कर देखा तो वह अशर्फ़ियों से भरा पड़ा था। वह उसे लेकर जब भागने लगा तो सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया। सिपाहियों ने संदूकची खोली तो उसमें उन्हें दिखायी पड़ा-कटा हुआ मनुष्य का सिर, जिससे अब भी रक्त बह रहा था। वह सिर बिल्कुल राजकुमार के सिर की तरह था। वे चोर और संदूकची को लेकर राजा के अंत:पुर की तरफ़ बढ़े।

इस अवधि में राघव कुसुमपुर के आश्रम में बैरागी से मिला। बैरागी को बहुत ही दुबला - पतला देखकर उसे आश्चर्य हुआ।

बैरागी ने राघव से कहा "सही समय पर आये हो। नागमणि से राजकुमार की रक्षा की जा सकती है। इस कार्य के लिए जिन मंत्रों का पठन करना चाहिये, वे मंत्र तालपत्रों में हैं। नागमणि और तालपत्र मेरे पास हैं। उन्हें उपयोग में लाकर आधा राज्य कमावो। मैं भी तुम्हारे साथ राजधानी चलूँगा"।
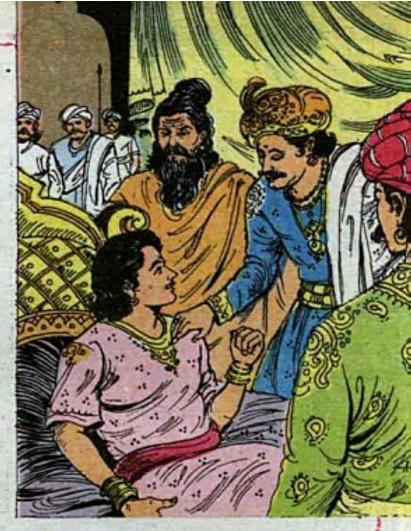
बैरागी ने राजकुमार का स्पर्श नागमणि से करवाया और मंत्रों का पठन किया। अकस्मात् राजकुमार का सिर ग़ायब हो गया। केवल धड़ ही बाकी रह गया। उससे रक्त बहने लगा।

राजा अपने पुत्र की यह दयनीय स्थिति देखकर आपे से बाहर हो गया। बैरागी ने क्रोधित राजा को शांत किया और कहा "राजन, आप चिंतित मत होइये। मणि का प्रभाव बड़ा ही

तीव्र होता है। मस्तिष्क इस तीव्रता को सहने की शक्ति नहीं रखता। इसीलिए मंत्र - प्रभाव से मैंने सिर को धड़ से अलग किया था। अब चिकित्सा धड़ की होगी''।

इतने में वहाँ सिपाही चोर को ले आये और राजा को पूरा वृत्तांत सुनाया। राजा संदूकची को खोलने ही वाला था कि राघव चिल्ला पड़ा ''वह मेरी है''। वह आगे बढ़ा और उसने जल्दी - जल्दी संदूकची खोली। उसकी चीज़ें यथावत् उसमें थीं। उन्हें प्यार से देख ही रहा था कि राजकुमार सजीव हो उठ बैठा।

राजा के आनंद की सीमा नहीं रही। वचन के अनुसार बैरागी को उसने आधा राज्य दिया। बैरागी ने तक्षण ही आधा राज्य राघव के हवाले किया।

राघव ने राजा को विनयपूर्वक प्रणाम करते हुए कहा ''राजा बनने की योग्यता मुझमें नहीं है। मैं जैसा हूँ, वैसे ही मुझे रहने दीजिये। राज्य-भार आप ही संभालियेगा''।

राजा ने बैरागी की ओर देखा। तब बैरागी ने राजा से कहा ''आप संदूकची को अशर्फ़ियों से भर दीजिये और आवश्यक सुरक्षा के साथ इसे अपना गाँव भेज दीजिये।''

राघव बैरागी की बातें सुनकर घबड़ा गया और बोला ''स्वामी, आपसे लोकज्ञान पाये बिना कैसे लौटूँ ?''

बैरागी ने मुस्कुराते हुए कहा ''लोकज्ञान सीखने से प्राप्त नहीं होता। अच्छाई सीमा पार कर जाए तो लोकज्ञान पाया नहीं जा सकता। मतलब इसका यह हुआ कि तुम लोकज्ञान पा ही नहीं सकते। अब तुम्हें असीम धन और राजा का अभय प्राप्त हुए हैं। जिस सुशीला ने तुमसे प्रेम किया है, वह लोकज्ञान से संपन्न है। उससे विवाह करो और उसके कहे अनुसार करते जाओ। तुम्हारी रक्षा करते- करते मैं दुबला - पतला हो गया हूँ। मेरी शारीरिक शक्ति क्षीण हो गयी है। भविष्य में सावधान रहो। ख्याल रखना कि कभी भी तुम्हें मेरी आवश्यकता ना पड़े।''

राघव अब समझ गया कि विवेकहीन अच्छाई से मैंने बैरागी को दुख पहुँचाया है। भविष्य में बैरागी के ही कहे अनुसार जीवन - यापन किया।
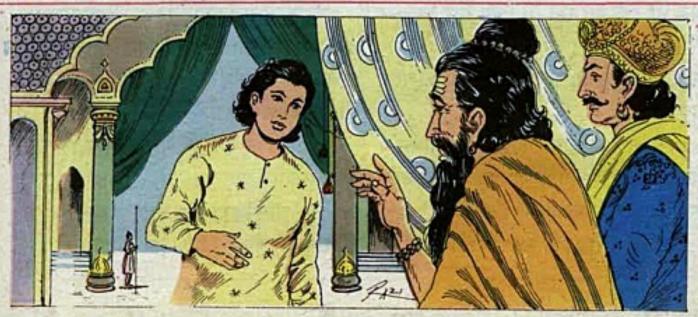
प्रकृति - रूप अनेक

आदि वानर

१६७० में मेडगास्कर ने लंगूर खोज निकला। इसका आकार छोटा है, पूँछ पर बाल हैं, आँखें इसकी बड़ी हैं, इसलिए पहले समझा गया कि यह गिलहरी है। परंतु यह एक आदि वानर है। इसके दोनों हाथों में एक बड़ी उँगली होती है। उससे वह पेड़ के छिलकों के नीचे पड़े हुए कीड़ों को पकड़ लेता है और खा लेता है। चूँकि कीड़ों के अलावा कुछ और नहीं खाता, इसलिए इनका अस्तिव ही समाप्त हो जाने का भय है।

गिद्धों की सहनशक्ति

अमेरीका में दिखायी देनेवाले 'एवरग्लेड कैरस' नामक गिद्घों का आहार है घोंधा। ऊपर के छिलके से बाहर आने के बाद ही ये उसे खाते हैं। झुकी हुई उनकी नाक बहुत ही दृढ़ होती है। किन्तु टेढ़े छिलके से धूँधे को बाहर निकालने के काम में इसका उपयोग नहीं हो पाता। ये सहनशक्ति से प्रतीक्षा करते हैं और जैसे ही घोंधा बाहर आता है, उसपर झपट पड़ते हैं और उसे खा जाते हैं।

तिरुचट्टा जैसा दीमक

काग़ज व लकड़ी को खा जानेवाले सफ़ेद दीमक को झुंडों में आपने देखा ही होगा। अगर इन्हें ध्यान से देखा जाए तो ये चींटियों की तरह नहीं बल्कि तिरुचट्टा जैसे लगते हैं। बड़ी-बड़ी बाँबियाँ बनानेवाले ये दीमक भूमि के अंदर के कमरों में होते हैं। जब बड़े होते हैं, तो पंख फैलाकर उड़ जाते हैं। जब जोड़ी मिलती है तो अपना अलग निवास-स्थल बना लेते हैं। ये सफ़ेद दीमक संसार भर में पाये जाते हैं।
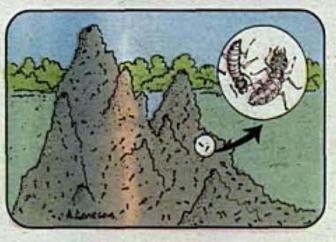
Say "Hello" to text books and friends
'Cause School days are here again
Have a great year and all the best
From Wobbit, Coon and the rest!

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, फरवरी, १९९५ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

S.G. Seshagiri

Devidas Kasbekar

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० दिसंबर, '९४ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

अक्टोबर, १९९४, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **इंजेक्शन से स्वास्थ्य बने**

दूसरा फोटो : **टेलिफोन से बात बने**

प्रेषक : **देवशर्मा, एड्वोकेट,**

पूरनपुर, उत्तर प्रदेश - ४८२००२

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

इससे बढ़कर कौन !
big chief
PARLE
नया
पारले
बिग चीफ
फलों के स्वादवाली टॉफी
केला ♦ मैंगो ♦ ऑरेंज
क्या आप
बिग चीफ़
बनना चाहते हो?
तो फ़ौरन अपने पते के
साथ बिग चीफ़ टॉफ़ी के
१० रैपर हमें भेजो और
पाओ एक पुस्तिका,
जिसमें है तरीका
बिग चीफ़ बनने का.
रैपर भेजने का पता:
रीजनल सेल्स मैनेजर
पारले प्रॉडक्ट्स लिमिटेड
ई-290, ग्रेटर कैलाश II
नई दिल्ली - 110 048.